Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वत्थ विणीयमच्छरे।

किसी के प्रति मात्सर्यभाव मत रखो।

❋ ❋ ❋

इणमेव खणं वियाणिया।

उपलब्धि का क्षण यही है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 25 • 28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 26-03-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी की स्मृति सभा का मुख्य आयोजन

हमारे धर्मसंघ की विशिष्ट विभूति थी शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म साधना केंद्र, २० मार्च, २०२२

शासनमाता का पूज्यप्रवर सन्निधि में मुख्य स्मृति सभा का आयोजन। महानंद के साधक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनकी स्मृति में श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए फरमाया कि प्राणी जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक समय आता है कि वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। शास्त्रकार ने इस जीवन की नश्वरता को चित्रित करते हुए कहा है कि जैसे कुश के अग्रभाग पर ओस की बूँद लटकती है, वह कितने समय तक रह सकती है। बहुत अल्प समय तक रहती है, उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन है, एक दिन समाप्ति को प्राप्त हो जाता है।

यह एक सृष्टि की नियति व्यवस्था है कि जन्म लिया है, तो मृत्यु होगी ही होगी। जन्म लेकर मनुष्य मरेगा ही नहीं तो इतने लोग इस धरती पर कैसे समाहित होंगे। हर प्राणी की यही मर्यादा है कि आए हो तो कुछ समय रहो। पर एक दिन आगे जाना पड़ेगा। किसी को लंबा काल मिल जाता है तो किसी को जीने का अल्पकाल भी मिलता है।

विशेष बात है कि आदमी जीवन बढ़िया जीए। जीवन और मृत्यु दो तट हो गए। बीच में जो धारा बहती है, वह जीवन धारा है। यह धारा कैसे निर्मल और गतिमान रहे यह

शासनमाता की स्मृति में खड़े होकर चार लोगस्स का ध्यान करते हुए पूज्यप्रवर

धारा उपयोगी बनी रहे। यही खास बात है। अनेक लोग होते हैं–जिनकी जीवनधारा निर्मल रहती है। गतिमता और उपयोगिता भी रहती है।

आज हम जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट विभूति की स्मृति सभा मना

रहे हैं। वह विशिष्ट विभूति शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हैं। वे जन्म लेकर इस मनुष्य जन्म में आई थीं। लाडनूं के बैद परिवार से उनका संबंध था। कुछ वर्षों बाद हमारे धर्मसंघ में दीक्षित हो गई। परमपूज्य आचार्य तुलसी के उपपात में वे दीक्षित हुई। वि०सं० १९६८ में जन्मी और २०१९ आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन केलवा में दीक्षित हुई। वह दिन तेरापंथ द्विशताब्दी का दिन था।

ग्यारह वर्ष तक साधारण साध्वी के रूप में रही। वे गुरुकुलवास में ही रही। उन्होंने उन ग्यारह वर्षों का शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा लाभ उठाया, बहुत विकास किया। आचार्य तुलसी के जीवन से इनके जीवन की कई समानताएँ हैं। आचार्य तुलसी को भी ग्यारह वर्ष तक सामान्य साधु के रूप में गुरुकुलवास में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। ग्यारह वर्ष दीक्षा के बाद वे हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा के रूप में नियुक्त हुई।

गुरुदेव तुलसी ने उनको दीक्षित, शिक्षित और साध्वीप्रमुखा के रूप में गंगाशहर में वि०सं० २०२८ माघ कृष्णा-१३ को साध्वीप्रमुखा के रूप में दायित्व सौंपा, नियुक्त किया। वे आठवीं साध्वीप्रमुखा बनी और ५० वर्षों से भी अधिक समय तक वो साध्वीप्रमुखा के रूप में रही। हमने लाडनूं में ३० जनवरी, २०२२ को उनका अमृत महोत्सव मनाया था। बड़ा भव्य आयोजन हो गया था। आचार्य तुलसी भी हमारे धर्मसंघ में एकमात्र आचार्य हुए हैं, जिन्होंने ५० वर्षों से अधिक समय तक रह कर सेवा की थी। उनका भी ५० वर्ष की संपन्नता पर अमृत महोत्सव मनाया गया था।

वे तीन आचार्यों के शासनकाल में रही। एक विशिष्ट बात है कि किसी साध्वीप्रमुखा को इतने लंबे काल तक साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा देने का मौका मिला था। आचार्य तुलसी की बड़ी कृपा दृष्टि उन पर रहती थी। उन्हें महाश्रमणी अलंकरण तो वि०सं० २०३५ में गुरुदेव तुलसी ने राजलदेसर में दे दिया था। बाद में उन्हें महाश्रमणी पद व संघ महानिर्देशिका का पद भी दिया था।

मैंने भी उनको गोहाटी में असाधारण साध्वीप्रमुखा के रूप में स्थापित किया था। साध्वीप्रमुखा के ५० वर्षों की संपन्नता का अवसर आया तो उन्हें शासनमाता का सम्मान दिया। तेरापंथ धर्मसंघ में वे अद्वितीय साध्वी हैं, जिनको शासनमाता का सम्मान मिला।

उनके जीवन में कुछ विशेषताएँ थीं। उनमें अनेक प्रतिभाएँ थीं, साहित्यिक प्रतिभा थी। कितने ग्रंथों का लेखन-संपादन किया। उनमें कविता बनाने का वैदुष्य था। उनके भाषण में भी वैदुष्य था। हिंदी-संस्कृत भाषा का तो अच्छा ज्ञान था ही, अंग्रेजी भाषा का भी कुछ अध्ययन किया हुआ था। राजस्थानी हमारी आम भाषा है ही।

साध्वीप्रमुखाजी में ज्ञान का विकास था। उनका एक महत्त्वपूर्ण कार्य था, साध्वियों की सार-संभाल व्यवस्था का। पृष्ठभूमि निर्माण में उनका एक बड़ा योगदान था। वे कुशल व्यवस्थापिका थी। कुछ अंशों में विशिष्ट विभूति साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी थी। समण श्रेणी के विकास में भी उन्होंने योगदान दिया है।

संतों से भी उनका संपर्क था। आचार्यप्रवर ने स्वयं की बाल्यावस्था का दिल्ली का प्रसंग साझा किया। उनमें संपादन की विशेष कला थी। अनेक रूपों में वे तीन आचार्यों की सेवा करने वाली साध्वीप्रमुखा थी। पाँच सौ से अधिक नवदीक्षित साध्वियों का उन्होंने केशलोचन कर दिया था। लंबी यात्राएँ उन्होंने की थी। हमारे धर्मसंघ में उच्च स्तर पर रहने वाली वे साध्वीप्रमुखा थी।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

हिंसा से बचने के लिए केवल नियम नहीं हृदय परिवर्तन भी होना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म साधना केंद्र, १६ मार्च, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञान और आचरण ये दो चीजें हैं। दो हैं और एक-दूसरे से जुड़ी हुई हो सकती हैं। आचरण बढ़िया तब हो सकता है, जब उस आचरण के विषय में ज्ञान बढ़िया हो। बिना ज्ञान का आचरण बढ़िया नहीं हो सकता है। चिकित्सा है, अच्छी योग्यता अर्जित कर ली तो इलाज अच्छा कर सकता है।

शास्त्रकार ने अहिंसा की बात बताई है। ज्ञानी और ज्ञान का सार यह है कि वह किसी की हिंसा नहीं करता। अहिंसा का व्यवहार करना है, तो पहले अहिंसा को जाने। हिंसा को भी जानें। जीव क्या अजीव क्या वो जान ले, फिर हिंसा से बचने का प्रयास हो सकता है। अहिंसा को परम धर्म कहा गया है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022

✦ *पुण्य के प्रभाव से व्यक्ति को सुमधुर वाणी, शारीरिक स्वास्थ्य, सज्जनता, शालीनता, तीक्ष्ण बुद्धि आदि की प्राप्ति होती है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने ५ दिन के जप एवं आध्यात्मिक अनुष्ठान के दिए निर्देश

महासती शासनमाता कनकप्रभाजी के महाप्रयाण से एक युग का अवसान

अध्यात्म साधना केंद्र, १७ मार्च, २०२२

साधना के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को दर्शन देने स्वयं सुखसाता पूछने पधारे। शासनमाता के गिरते स्वास्थ्य को देखते हुए पूज्यप्रवर ने उनकी भावना देखकर उन्हें प्रातः लगभग ७:२७ पर चतुर्विध संघ की उपस्थिति में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। पलक झपकते ही ये समाचार देश-विदेश में पहुँच गए।

धीरे-धीरे शासनमाता के स्वास्थ्य स्थिति गंभीर होती जा रही थी। पूज्यप्रवर भी उनके परिपार्श्व में विराजमान थे। चतुर्विध धर्मसंघ आध्यात्मिक जप अनुष्ठान कर रहा था। शासनमाता की अति गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें लगभग ८:४० पर चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवा दिया और प्रातः लगभग ८:४५ पर उनका संथारा सीज गया। शासनमाता ने वर्तमान नश्वर देह को त्यागकर महाप्रयाण कर दिया।

पूज्यप्रवर ने डॉक्टर की सलाह से उनके महाप्रयाण होने की घोषणा की। पूरा धर्मसंघ एक बार तो स्तब्ध-सा रह गया पर जो होना था सो हो गया। आखिर एक दिन तो वर्तमान शरीर को जीव छोड़ता ही है। साध्वियों ने उन्हें नए वस्त्र पहनाकर उनके पार्थिव शरीर को श्रावक समाज के सुपुर्द कर दिया।

श्रावक समाज ने शासनमाता के पार्थिव शरीर को सभी के अंतिम दर्शनार्थ महाश्रमण सभागार में अवस्थित किया। अंतिम दर्शनार्थ श्रावक-श्राविका समाज उमड़ पड़ा। अंतिम

दर्शन कर सभी ने उनकी आत्मा के प्रति मंगलकामना करते हुए स्वयं को कृतार्थ किया।

बैकुंठी सरदारशहर में निर्मित करवाकर मँगवाई गई। पाँच खंडी बैकुंठी थी। ५१ चाँदी कलश लगे थे। बैकुंठी देव विमान के समान शोभित हो रही थी। उनकी अंतिम महाप्रयाण यात्रा सायं चार बजे निकालने का निर्णय किया गया। शासनमाता के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार अध्यात्म साधना केंद्र के पीछे नव भूमि में करने का निर्णय किया गया।

शासनमाता के पार्थिव शरीर को देव विमान में स्थापित किया गया। सभी चारित्रात्माओं, समणीवृंद व श्रावकसमाज ने अंतिम अनमने मन से विदाई दी। पूज्यप्रवर महाश्रमण सभागार में पधारे। शासनमाता के पार्थिव शरीर को अंतिम मंगलपाठ सुनाया। लगभग सायं सवा चार बजे महाश्रमण सभागार से शासनमाता की अंतिम महाप्रयाण यात्रा शुरू हुई। पूरा सभागार जयकारों से गुंजायमान हो रहा था।

अंतिम यात्रा अध्यात्म साधना केंद्र से बाहर निकलते हुए बाहर का भ्रमण करते हुए पुनः अध्यात्म साधना केंद्र के दूसरे मार्ग से अंदर प्रवेश किया और अंतिम संस्कार जो निर्धारित था वहाँ पहुँच गई। वहाँ पर जैन संस्कार विधि से अंतिम संस्कार करवाया। शासनमाता के संसारपक्षीय पारिवारिकजनों ने मुखाग्नि दी और शासनमाता का पार्थिव शरीर देखते-देखते पंच महाभूत में विलीन हो गया।

पूज्यप्रवर ने, मुख्यनियोजिका जी ने, साध्वीवर्याजी ने अपने भावपूर्ण उद्गार शासनमाता के प्रति अभिव्यक्त किए। दिल्ली श्रावक समाज ने पूरी जागरूकता से अपने दायित्व का निर्वहन किया। बालाजी हॉस्पिटल परिवार का पूरा सहयोग रहा।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी को तीन-तीन आचार्यों की सेवा में दायित्व निर्वहन का संयोग मिला। लगभग ५० वर्ष से ऊपर उनका साध्वीप्रमुखा का काल रहा। लगभग ६१ वर्ष से ज्यादा का उनका संयम पर्याय रहा। उनका व्यवस्था परिप्रेक्ष्य तो बेजोड़ था ही, साहित्य सृजन व साहित्य संपादन भी उनका अद्वितीय रहा। उन्हें कवयित्री रामकुमारी वर्मा के समकक्ष देखा गया था।

आज एक देदीप्यमान नक्षत्र सबकी आँखों से ओझल हो गया। शासनमाता वास्तव में शासनमाता ही थी। उनकी ममता माँ से भी ऊपर थी। वे मातृहृदया थी। उनकी क्षतिपूर्ति तेरापंथ समाज के लिए अकल्पनीय है।

पूज्यप्रवर ने निर्देश दिराया है कि २१ मार्च तक अन्य कार्यक्रमों को गौण करते हुए पाँच दिन तक अध्यात्मिक जप-अनुष्ठान व शासनमाता की स्मृति सभाओं का आयोजन धर्मसंघ में हो। लगभग २२ मार्च को पूज्यप्रवर का अध्यात्म साधना केंद्र से विहार कर दिल्ली के उपनगरों में विचरण करने की संभावना है।

साधु के जीवन में त्याग के साथ ज्ञान हो तो सोने पे सुहागा : आचार्यश्री महाश्रमण

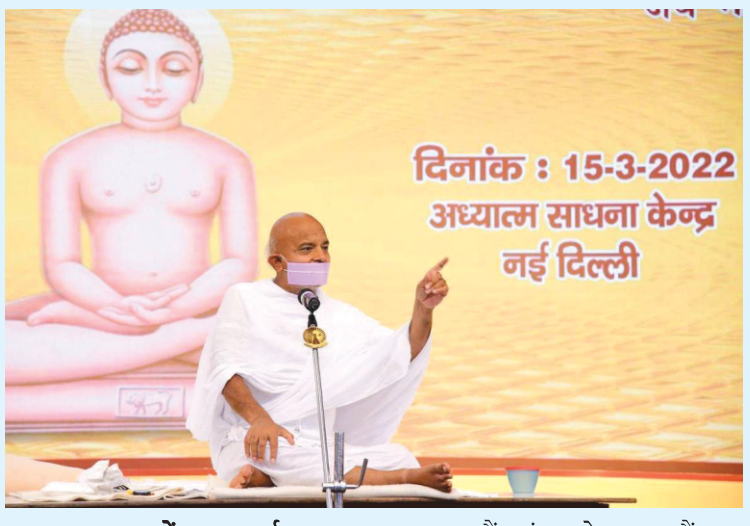

अध्यात्म साधना केंद्र, १५ मार्च, २०२२

जैन धर्म के प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी साधु-संतों के पास जाता है। श्रमण महान के पास जाता है। साधुओं की पर्युपासना करता है। पर्युपासना क्यों करनी चाहिए? क्या लाभ मिलता है।

जो साधनाशील है, अहिंसा के आराधक हैं, संयम के साधक हैं, तप प्रयोक्ता है, ऐसे महापुरुषों के दर्शन करने से भी एक प्रेरणा मिल सकती है, पावनता का अनुभव हो सकता है। शांति मिल सकती है, कर्म-निर्जरा भी होती है। साधुओं के तो दर्शन भी पुण्य हैं। साधु चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। साधु के दर्शन से शीघ्र लाभ मिलता है, कर्म झड़ते हैं।

साधु के दर्शन करने से कुछ सुनने को मिलता है। सुनने से ज्ञान होता है और ज्ञान होने से विशेष ज्ञान हो सकता है। मनुष्य जन्म दुर्लभ है, श्रुति भी दुर्लभ है। प्रवचन श्रवण के साथ सामायिक भी हो। हेय-उपादेय का विवेक प्राप्त हो सकता है। झूठ बोलने वाले को तनाव ज्यादा हो सकता है। सच्चाई में आत्मबल रह सकता है। आदमी न्यायालय में झूठ न बोले। झूठा आरोप न लगाए।

विज्ञान होने पर प्रत्याख्यान होता है। निर्जरा-तप होगा। करते-करते आत्मा अक्रिया तक चली जाती है। आदमी सिद्धि को भी प्राप्त कर लेता है। साधुओं की संगति का कितना बड़ा लाभ है। कितनी अच्छी प्रेरणा मिल सकती है। मौन करना भी अच्छा है, तो बोलना भी अच्छा है। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने कितना प्रवचन किया था। लोगों का कल्याण किया था। बोलने से लाभ भी होता है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हिंसा से बचने के लिए केवल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रश्न है, अहिंसा का आचरण कैसे करें? आदमी यह समझ ले कि मेरे आत्मा है, तो दूसरों के भी आत्मा है। जीवन सबको प्रिय है। आदमी हिंसा में जाता है, उसका कारण है, भीतर का भाव। असद्, लोभ, अहंकार का भाव। ये भाव हिंसा की ओर ढकेल देता है। बाहर का युद्ध तो बाद में होता है, पहले मस्तिष्क में युद्ध होता है।

व्यवहार में गृहस्थों को आवश्यक हिंसा करनी भी पड़ती है। पर क्रोध, लोभ में आकर हिंसा न करें। अपराधिक हिंसा न हो। हिंसा एक तो भावों से होती है। दूसरा हिंसा करने का कारण है—गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी—इन कारणों से आदमी हिंसा में जाने के लिए बाध्य हो सकता है। अभाव से कभी स्वभाव बिगड़ जाता है। निमित्तों का प्रभाव पड़ सकता है, पर हमारे मनोबल के भाव मजबूत हों। हिंसा के निमित्तों का उभार न हो।

हिंसा से बचने के लिए सिर्फ नियम से ही काम नहीं चलता साथ में हृदय परिवर्तन भी होना चाहिए। दोनों के मिलने से सुधार जल्दी हो सकता है। संत लोग समझकर हृदय परिवर्तन करा सकते हैं। योग-अध्यात्म से मानव का मन बदला जा सकता है। व्यवस्था तंत्र का भी अपना उपयोग हो सकता है। पर साथ में अध्यात्म तंत्र भी चले। उपदेश-संदेश से लोगों को समझाया जा सकता है।

सारे लोग उपदेश से समझ जाएँ संभव नहीं हो तो फिर उन पर व्यवस्था का, डंडा का प्रयोग करना पड़ता है। शास्त्रकार ने कहा है कि ज्ञान से अहिंसा को जानकर उसका आचरण करें। अहिंसा, सुख-शांति का मार्ग हैं आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से अहिंसा का संदेश दिया था। २००२ में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के अहमदाबाद प्रवास का अहिंसा यात्रा के प्रकरण को समझाया।

विकास अहिंसा से ही हो सकता है। अहिंसा एक धर्म है, नीति हैं अहिंसा सुख का मार्ग है। हमेशा अहिंसा में रहो। अहिंसा-समता, सुख-शांति का बहुत बड़ा मार्ग है। साध्वीप्रमुखाश्री जी के स्वास्थ्य की मंगलकामना हेतु मंत्र जप करवाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में शाहदरा से राजेश सिंघी, अनिल पटवा, चंद्रकांत कोठारी, नोएडा व उत्तरी दिल्ली की महिला मंडल, गांधीनगर सभा समुह ने गीत से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनमाता की बहुश्रुतता से सभी को बहुश्रुत बनने की प्रेरणा मिलती रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म साधना केंद्र, १८ मार्च, २०२२

संयम के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमण जी जिस लक्ष्य से दिल्ली उग्र विहार करके पधारे थे, वो लक्ष्य उनका पूरा हुआ। अंत समय तक आपश्री ने शासनमाता को चित्त-समाधि पहुँचाकर तीसरा मनोरथ भी पूरा करवा दिया। ऐसे अनुशास्ता का चतुर्विध धर्मसंघ गौरवपूर्ण वर्धापना करता है। भावना यही है कि हर जन्म में हमें ऐसे धर्मगुरु प्राप्त हों।

दृढ़-संकल्प बल के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान कराते हुए फरमाया कि एक महत्त्वपूर्ण चिंतन का विषय है कि मेरा इहलोक हित भी हो और परलोक का भी हित हो, सुगति प्राप्त हो। यह कैसे संभव हो सकता है? इसके लिए क्या करना चाहिए?

इहलोक यानी वर्तमान मनुष्य जीवन में भी हित हो और आगे जहाँ भी जाना हो, वहाँ भी हित हो। मेरी सुगति हो। इसके लिए दसवैआलियं आगम में आगमकार ने बताया है कि बहुश्रुत की पर्युपासना करो। साधु जो खुद त्यागी, संयमी और ज्ञानी भी है। बहुश्रुत साधु की पर्युपासना करो, उनसे पूछो कि मेरी सुगति कैसे हो सकती है। बहुश्रुत जो रास्ता बताए उस पर ध्यान दो। अध्यात्म की बात वे बता सकते हैं। आत्मा-परमात्मा के बारे में वे बता सकते हैं।

बहुश्रुत बहुत बड़ा ज्ञानी होता है। हमारे धर्मसंघ में बहुश्रुत परिषद स्थापित की गई है। उसके सप्त सदस्य होते हैं, पर आज की दिनांक में छः ही हैं। बहुश्रुत ज्ञान से भी होते हैं, कुछ पदेन भी होते हैं।

कल का दिन फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी चातुर्मासिक पक्खी का एवं होली का दिन था। हमारे धर्मसंघ में एक प्रसंग बन गया, जो एक इतिहास का विषय भी बन गया। जो कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व होते हैं, उनकी बात विशिष्ट भी हो सकती है। हमारे धर्मसंघ के साध्वीप्रमुखा पद पर आसीन महाश्रमणी कनकप्रभा जी का कुछ अर्से के संघर्ष के बाद महाप्रयाण हो गया। मानो जीवन और मृत्यु के बीच युद्ध चल रहा था। कई दिनों तक जीवन ने मृत्यु को पछाड़ने का प्रयास किया था। पर आखिर मृत्यु ने विजय प्राप्त की और जीवन समाप्ति को प्राप्त हो गया।

हमारे संघ महानिर्देशिका, असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी जो शासनमाता सम्मान से महिमामंडित थी, उनका कालधर्म कल प्रातः हम लोगों की उपस्थिति में हो गया, ऐसा ज्ञात हुआ। साध्वीप्रमुखाजी एक पदेन बहुश्रुत परिषद की सदस्या थी। उनका अपना अध्ययन भी था। उनको एक Learmat Person के रूप में मैं देखता हूँ। उनका बहुश्रुतत्त्व इस रूप में देखता हूँ कि वे पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रही। केलवा में तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर वि०सं० २०१७ अषाढ़ी पूर्णिमा को गुरुदेव तुलसी के मुखकमल से उनकी साध्वी दीक्षा संपन्न हुई। वे संयम पर्याय के सातवें दशक में थी। ६२वें वर्ष में चल रही थी।

जितना मैंने उनको देखा, संस्कृत भाषा का उनका अच्छा अभ्यास था। तत्त्व-ज्ञान, आगम ज्ञान का भी उन्हें ज्ञान था। गुरुदेव तुलसी का उन्हें साध्वी जीवन और साध्वीप्रमुखा के रूप में सान्निध्य मिला था। प्रायः वो उनके साथ ही रही थी। उनके निकट रहकर श्रुत लेखन, ज्ञान अर्जन का उनको मौका मिला।

भगवती की जोड़ जैसे विशाल ग्रंथों का उन्होंने गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में संपादन किया था। हिंदी भाषा पर भी उनका अच्छा विकास था। यदा-कदा वे हिंदी में कविताएँ बनाकर फरमाती। गुरुदेव तुलसी के कितने साहित्य का उन्होंने संपादन किया। अंग्रेजी भाषा का भी उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास किया था।

ज्ञान अनंत है, तारतम्य हो सकता है। भाषण भी अच्छा देती थी। वे एक बहुश्रुत साध्वी-निर्ग्रन्थी थी। अध्ययन-अध्यापन का क्रम भी चलता था। यदा-कदा हमारे पास चिंतन गोष्ठियाँ होतीं, उसमें वो विराजती थी। गुरुदेव तुलसी के समय अंतरंग परिषद होती तो उसमें हम चार होते थे—गुरुदेव तुलसी, युवाचार्य महाप्रज्ञ, महाश्रमणी कनकप्रभा और महाश्रमण मुदित कुमार। गुरुदेव तुलसी ने मुझे भी वो एक सम्मान दिया था।

ऐसे ज्ञानवान से कुछ पूछा जाए तो वे अपना मंतव्य भी बताती थी। ज्ञान के साथ स्थान-पद का भी महत्त्व होता है। शासनमाता ने जितना साहित्य सृजन और संपादित किया वो महत्त्वपूर्ण है। श्रावक-श्राविकाओं को भी संभालती थी। शास्त्रकार ने कहा कि सुगति कैसे मिले इस बारे में बहुश्रुत से पूछना चाहिए। अर्थ का विनिश्चय करना चाहिए।

हमारे धर्मसंघ में अनेक चारित्रात्माएँ हैं, जिनका ज्ञान-अध्ययन अच्छा है, परंतु जो स्थापित होते हैं, बहुश्रुत परिषद के सदस्य हैं। हमारे धर्मसंघ की एक बहुश्रुत परिषद सदस्या को खो दिया। नियति का नियम है, उसको टालना भी मुश्किल है। डॉक्टर उपाय कर सकते हैं, पर एक दिन तो अवसान को प्राप्त होना ही होता है।

उनके जीवन का नौवाँ दशक और साध्वीप्रमुखा का ५१वाँ वर्ष चल रहा था। हमारे धर्मसंघ में पहली साध्वीप्रमुखा हुई हैं, जिन्होंने छठे दशक में प्रवेश कर लिया। लाडनूं जैविभा में उनके ५० वर्षों की संपन्नता के दिन साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव भी उनकी विद्यमानता में हमने मनाया था। यह हमारे धर्मसंघ का अद्वितीय अवसर था कि किसी साध्वीप्रमुखा को इतना लंबा काल मिला हो। तीन पीढ़ियों के साथ वो रही हैं।

हमारी लंबी पूर्वांचल और दक्षिणांचल की यात्रा में वो साथ रही थी। अच्छा यह भी हुआ कि हमने उनका अध्यात्म साधना केंद्र में विराजने का निर्णय कर लिया। धर्म के माहौल में रहने का मौका मिल गया। उनका ज्ञान, अध्ययन, कवित्व उनकी विशेषताएँ थी। वे साध्वी के रूप में हमारे धर्मसंघ में आई और साध्वीप्रमुखा व अनेक अलंकरणों से, विशेषणों से वे अलंकृत थीं। सम्मानित की गई थीं।

हमारे धर्मसंघ में अनेक रूपों में उन्होंने सेवा दी थी। सेवा करके अंतिम समय में भी उनको स्वाध्याय करने का मौका मिला। कल प्रातः शासनमाता विदा हो गई। उनकी आत्मा परम की दिशा में आगे बढ़े। वो बहुश्रुत थी तो औरों को बहुश्रुत बनने की, ज्ञानी बनने की प्रेरणा मिलती रहे, मंगलकामना है।

शासनमाता की स्मृति सभा में मुनि ऋषभकुमार जी, मुनि हितेंद्र कुमार जी, मुनि नयकुमार जी, मुनि गौरवकुमार जी, मुनि शुभंकर जी आदि एवं साध्वी शीलप्रभा जी, साध्वी कार्तिकप्रभाजी, साध्वी प्रबुद्धयशाजी, साध्वी कमनीयप्रभाजी, साध्वी सार्थकप्रभाजी, समणी सत्यप्रज्ञाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञा जी ने अपने भावों द्वारा अभिव्यक्ति दी।

संजय बबीता भानावत, प्रतिमाधारी श्रावक धनराज बैद, आरती जैन, किशनलाल डागलिया, पूनमचंद छाजेड़ ने भी शासनमाता की स्मृति में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विनय के गुण को अपनाएँ, घर को स्वर्ग बनाएँ

चेन्नई।

तेरापंथ सभा भवन, साहुकारपेट में आयोजित अभिनंदन समारोह में मुनि अर्हत कुमार जी ने कहा कि श्रावक समाज का विनम्रता से युक्त होने पर उनका घर स्वर्ग के समान होता है, दूसरे लोग भी उनका उदाहरण दे सकते हैं।

घर में बिखराव के मूल में सामंजस्य की कमी का होना होता है। पढ़ाई के साथ में गढ़ाई होने पर व्यक्ति सामंजस्य की ओर अग्रसर हो सकता है। मुनिश्री ने विशेष रूप से कहा कि झुकता वही है, जिसमें कुछ ज्ञान है—अकड़पन तो मुर्दों की पहचान है। झुकने वाला ही महान होता है। बड़ों के साथ विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए। बड़ों में चित्त में समाधि उत्पन्न करना धर्म है। विद्या लेने वालों को शिष्य बनकर विद्या ग्रहण करनी चाहिए।

हमारे धर्मसंघ की विशिष्ट विभूति थी शासनमाता...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आचार्यों ने उन्हें बड़ा सम्मान दिया था। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें बाजोट-पट्ट पर बिठाया था। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी एक बार पट्ट पर विराजमान करवाया था। मैंने भी उन्हें पट्ट पर विराजमान करवाया था। इतना सम्मान पिछली सात साध्वीप्रमुखाओं को नहीं मिला होगा कि आचार्य के सामने कोई साध्वी पट्ट पर विराजमान हो जाए।

पूरे साध्वी जीवन में एक चतुर्मास उन्होंने अलग किया। बाकी सारे चतुर्मास गुरुकुलवास में ही किए। कभी-कभी छोटी यात्राएँ भी की थीं। पिछले कुछ अर्से से उनके स्वास्थ्य की बड़ी कठिनाई हो गई। उनको इलाज के लिए दिल्ली भिजवाया। बाद में मैं भी पहुँच गया। बाद में यहाँ अध्यात्म साधना केंद्र में आ गए थे। पर आखिर १७ मार्च को सवेरे ८:४५ पर वे कालधर्म को प्राप्त हो गई।

लगभग ६२ वर्षों तक हमारे धर्मसंघ में साध्वी के रूप में तपस्या-साधना की और जीवन के ८१वें वर्ष में वे विदा हो गई। उनकी स्मृति में हम चार लोगस्स का ध्यान करते हैं। आज खड़े-खड़े ध्यान करना चाहूँगा। चार लोगस्स के साथ चार नवकार मंत्र का ध्यान करवाया।

वे चातुर्मासिक पक्खी पर पधारी हैं। मैंने उनकी स्मृति में एक गीत बनाया है—'शासनमाता का सादर स्मरण करें हम'। का सुमधुर संगान किया। हमारी शासनमाता साध्वीप्रमुखाजी विदा हो गई है। साध्वियाँ उनकी प्रेरणाओं का उपयोग करती रहें। मैं शासनमाता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी आत्मा परम की दिशा में आगे बढ़े, ऐसी आध्यात्मिक मंगलकामना।

मुख्य मुनिप्रवर ने भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि साध्वीप्रमुखाजी ने लेखन के क्षेत्र में अपनी उन्नत ज्ञान चेतना से ऐसा चमत्कार किया चाहे वो गद्य धारा हो या पद्य धारा हो, वो साहित्य कला में अग्रणी थी। वे तेरापंथ धर्मसंघ की अनमोल धाति थी। गुरुदेव तुलसी ने उन्हें कला से महाकला के रूप में संघ में प्रतिष्ठित कर दिया था। वे त्रिवेणी संगम के समान थी। 'शासनमाता की बातां अब रह गई है, अवशेष' गीत का सुमधुर संगान किया।

मुख्य नियोजिका जी ने शासनमाता को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आठ दशक पहले उन्होंने जन्म लिया था। दूसरे दशक में वैराग्य की ओर चरणन्यास किए। छः दशकों की सुदूर यात्रा, पवित्रता, पुरुषार्थ और परोपकार की त्रिवेणी है। गुरुभक्ति, आत्म शक्ति और संघ अनुरक्ति की त्रिपथगा है। उन्होंने महाश्रमणी, संघ महानिर्देशिका, असाधारण साध्वीप्रमुखा और शासनमाता के रूप में अपनी विलक्षण सेवाएँ दी।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि मेरे जीवन के अनेक प्रकरण उससे जुड़े हुए हैं, जो मुझे जीवन भर प्रेरणा देते रहेंगे। उन्होंने मुझे बहुत सी प्रेरणाएँ प्रदान करवाई थी। उन्होंने कहा था कि जिसने चोंच दी है, वह चुग्गा भी देंगे। वे हमेशा गुरुप्रसाद के अभिमुख रहती थी और दूसरों को भी यही प्रेरणाएँ प्रदान करवाती थी।

स्मृति सभा में उपस्थित दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि दिव्य आत्म शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के लिए मैं आज यही प्रार्थना करूँगा कि उन्हें उत्तम गति और भगवान के श्रीचरणों में स्थान मिले। भगवान ने उन्हें विशेष सोच के साथ ही जन्म दिया था, जिसे वे सार्थक बना गईं और लोगों को नवीन पथ दिखा गईं।

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि मैं परम सौभाग्यशाली हूँ जो मुझे शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने उनकी ओर देखा तो मुझे लगा मैं उनके दिव्य तेज को सहन नहीं कर पा रहा हूँ। वे गंगा, जमुना, सरस्वती की तरह निर्मल थीं।

कार्यक्रम में संतवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद व मुमुक्षुवृंद ने सामुहिक रूप से पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। मुनि राजकुमारजी, मुनि रजनीशकुमार जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, मुनि जितेंद्र कुमार जी, मुनि मनन कुमार जी, मुनि वर्धमान कुमार जी, मुनि कुमारश्रमण जी, मुनि धर्मरुचिजी, साध्वी सुमतिप्रभाजी, शासन गौरव साध्वी कल्पलताजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी सुषमाकुमारीजी, शासनश्री साध्वी संघमित्राजी, समणी नियोजिकाजी, समणी अमलप्रज्ञाजी, समणी मधुरप्रज्ञाजी आदि ने अपनी-अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति देते हुए शासनमाता के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित की। इस दौरान मुनि कुमार श्रमण जी द्वरा भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविद तथा श्रमण संघ के आचार्यश्री शिवमुनि द्वारा प्राप्त शोक संदेश का वाचन भी किया।

अहिंसा यात्रा समारोह समिति के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा, महामंत्री डालमचंद बैद, के०एल० जैन पटावरी, दिल्ली सभा के अध्यक्ष जोधराज बैद, जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, आरएसएस के दीपक शुक्ला, दिगंबर जैन समाज व पंजाब केशरी के डायरेक्टर स्वदेश भूषण जैन, साध्वीप्रमुखाश्री जी की बहन निर्मला पुगलिया, स्थानकवासी समाज की ओर से राजीव जैन, मूर्तिपूजक समाज के ललित नाहटा बालाजी एक्शन हॉस्पिटल के राजकुमार अग्रवाल, डॉक्टर राकेश मिश्रा, अहिंसा इंटरनेशनल के सत्यभूषण जैन, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष पंकज डागा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष नीलम सेठिया, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष नवीन पारख, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लुणिया, बैद परिवार की ओर से प्रमोद बैद, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी के०सी० जैन, सुखराज सेठिया, दिल्ली टीपीएफ की ओर से अंकित श्यामसुखा, अणुव्रत विश्व भारती के भीखम सुराणा, अमृतवाणी के महामंत्री अशोक पारख, प्रदीप जैन, नरपत दुगड़ आदि ने विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। तेरापंथ समाज, दिल्ली, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, दिल्ली व मूलचंद बोथरा परिवार ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान कर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022

✦ *व्यक्ति के मन में मंगल के प्रति आकर्षण रहता है। धर्म को उत्कृष्ट मंगल कहा गया है। धर्म नए कर्मों को आत्मा से बद्ध नहीं होने देता और पूर्व कर्मों का नाश करता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

हासन।

अभातेममं के निर्देशानुसार तीनों संप्रदाय के साथ में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। शांतम्मा नाम की एक सिंगल पैरंट महिला को आर्थिक सहायता से सम्मान किया। अध्यक्ष संगीता कोठारी ने सभी का स्वागत किया। मूर्ति पूजा की बहनों ने भाषण और कविताओं के द्वारा अपनी भावना रखी। स्थानकवासी संप्रदाय की बहनों ने अपने विचार व्यक्त किए।

नम्रता सुराणा, निकिता कोठारी, ममता कोठारी, सपना सुराणा, ललिता सुराणा, दिव्या सेठिया, संगीता कोठारी और विनीता सुराणा ने माँ सती सदा रंजीत पर लघु नाटिका प्रस्तुत की। सभी बहनों ने समर्पिता गीत पर प्रस्तुति दी। निकिता सुराणा ने कविता पाठ किया। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के स्वास्थ्य लाभ हेतु आरोग्य बोहिलाभं का जाप करवाया गया। आभार ज्ञापन संतोष भंसाली ने किया। संचालन विनीता सुराणा ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

बारडोली।

अभातेममं के निर्देशन में मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में महिला दिवस मनाया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल अध्यक्षा संगीता सरणोत द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। तत्पश्चात युवती बहनों द्वारा समर्पिता गीत पर रोचक प्रस्तुति दी। She Can के अंतर्गत सार्वजनिक महिला मंडल की ट्रस्टी डॉ० लक्ष्मी बेन गांधी, अध्यक्षा जयश्री बेन और तृषा बेन पधारे। लक्ष्मी बेन ने वक्तव्य दिया।

रेणुका सामरा द्वारा नारी दिवस के उपलक्ष्य में गीतिका का संगान किया गया। मंडल की बहनों द्वारा महासती सरदाराजीं के जीवन पर आधारित नाटिका मंचन किया गया। सिंगल पैरेंट का दायित्व निभाते हुए स्वावलंबन से बच्चों का भविष्य संवारने हेतु राखी सामरा को प्रेरणा सम्मान से सम्मानित किया गया। कन्या मंडल द्वारा कविता की प्रस्तुति दी गई।

मुनि हेमंत कुमार जी ने नारी उत्थान के विषय में कहा कि नारी ही नारी का सम्मान करे व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े। मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहानी के माध्यम से बताया कि नारी अपना कर्तव्य निभाते हुए आगे बढ़े तो उसे अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाएगा।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के स्वास्थ्य लाभ हेतु 'आरोग्य बोहिलाभं' का १० मिनट जाप किया गया। आभार ज्ञापन व कार्यक्रम का संचालन मंत्री धर्मिष्ठा मेहता द्वारा किया गया। कार्यक्रम में ११० महिलाओं ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

राजलदेसर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित जप-तप को अधिक से अधिक प्रधानता देने के लक्ष्य से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में साध्वी बसंतप्रभाजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलाचरण महिला मंडल द्वारा सामुहिक समर्पिता गीत का संगान करके किया गया।

साध्वी बसंतप्रभाजी ने साध्वी दीपांजी के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डाला एवं शासनमाता असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु मंगलकामना की। साध्वी संकल्पश्री जी ने नारी शक्ति पर ब्राह्मी-सुंदरी, चंदनबाला के जीवन प्रसंगों का वर्णन किया। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों द्वारा नमस्कार महामंत्र का १३ घंटे तक अखंड जाप किया गया एवं उपवास, एकाशन, पोरसी, नवकारसी, द्रव्य सीमा, रात्रि भोजन के प्रत्याख्यान किए गए।

रीयल कार्यशाला का आयोजन

साहुकारपेट, चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार, चेन्नई कन्या मंडल के द्वारा रीयल कार्यशाला का आयोजन तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ सभा भवन, साहुकारपेट में हुआ। कार्यशाला का शुभारंभ में मंगलाचरण मेधा, अक्षिता पारेख ने किया। कन्या मंडल संयोजिका भवि बाफना ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत करते हुए अपनी भावना व्यक्त की। कन्या मंडल टीम ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल प्रभारी प्रीति डूंगरवाल ने कार्यशाला के विषय पर प्रकाश डाला।

तेममं, चेन्नई की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने सभी कन्याओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि कोई भी कठिनाई हो आपको ग्रो करना है। मोटिवेटेड रहना है। दूसरों के लिए एक मिशाल बनना है। अपनी तैयारी इतनी अच्छी करें, जो भी चाहे वह इजीली पा सकें। अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाएँ, यही है जीवन की बिसात।

कन्या मंडल सहप्रभारी वंदना पगारिया ने हंसी के अनेक प्रयोग बताते हुए कहा—हंसी हेल्थ के लिए बहुत इंपॉर्टेंट है, इम्यूनिटी बढ़ाती है। स्ट्रेस दूर करती है। कन्या मंडल को भी अनेक प्रयोग करवाए गए। महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने कन्याओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि आपको जीवन में आगे बढ़ने के लिए अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। आगामी चातुर्मास साध्वी मंगलप्रज्ञा जी का है। आप सभी कन्याओं को ज्यादा-से-ज्यादा लाभ लेना है। कार्यक्रम का संचालन ज्योति मुणोत एवं अक्षी बोहरा ने किया। अक्षी बोहरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

मदुरै।

अभातेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन में कार्यक्रम का प्रारंभ सीमंधर स्वामी की स्तुति से किया गया। शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के आरोग्य लाभ हेतु सामुहिक जाप किया गया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। तेममं अध्यक्ष नयना पारख ने सभी का स्वागत किया।

चंदा आंचलिया द्वारा प्रथम साध्वीप्रमुखाश्री सरदारांजी के जीवन चरित्र पर कहानी के माध्यम से उनकी जीवनी की प्रस्तुति दी गई। साथ ही अपनी खूबी एवं कमजोरी को जानने की प्रेरणा दी। ताकि हम जीवन में अपना लक्ष्य पा सकें। सक्षम अभ्युदय योजना के अंतर्गत मधु पारख को स्वावलंबन के उद्देश्य से मंडल की ओर से सहयोग किया गया। मधु पारख ने अपनी कहानी में बताया कि सभी बहनों को खुद के लिए समय देना चाहिए और लक्ष्य के प्रति दृढ़-संकल्पित रहना चाहिए।

आशा सावला, छिमश्री बैद, चंदा आंचलिया ने जैन दुपट्टा ओढ़ाकर मधु पारख का सम्मान किया एवं प्रेरणा पत्र से उनका हौंसला बढ़ाया। संचालन अध्यक्षा नयना पारख ने किया व आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष रेखा दुगड़ ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

राजाराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशन में महिला मंडल ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन जप-तप एवं कार्यक्रम का आयोजन किया। शासनमाता के स्वास्थ्य की मंगलकामना हेतु १३ घंटे का अखंड जाप घरों में हुआ एवं तेरापंथ भवन में एक घंटे का सामुहिक जप रखा गया। उसके उपरांत प्रेरणा सम्मान का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत मंगलाचरण के रूप में संगान किया।

कार्यक्रम का आगाज एवं सभी बहनों का स्वागत वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन पटावरी ने किया। संस्थापक अध्यक्ष कंचन छाजेड़ ने प्रेरणा सम्मान के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी एवं फूल देवी लोढ़ा के नाम की घोषणा की। उनका परिचय दिया कोषाध्यक्ष बीना कोठारी ने। प्रेरणा सम्मान का वाचन उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने किया। प्रेरणा सम्मान प्राप्त फूल देवी के बारे में अपने विचार उनके पुत्र कौशल लोढ़ा, पुत्र-वधू आशा लोढ़ा और छतर सेठिया ने रखे। कार्यक्रम की संयोजिका मंजु बोथरा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री वंदना भंसाली ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

भुवनेश्वर।

दुनिया को संवारने, सजाने व संस्कार देने वाली शक्ति का नाम नारी है। नारी ममता का मंदिर है। दिल का दरिया है, विनय का वैभव है, समर्पण की साधना है। त्याग उसका स्वभाव है। प्रदान उसका धर्म है। सहनशीलता उसका व्रत है। जिसके कोई शत्रु नहीं है उसका नाम नारी है। नारी ने कितने लोगों को सन्मार्ग की ओर लाया है। ये विचार मुनि जिनेश कुमार जी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तेरापंथ भवन में व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि नारी का उत्कृष्ट रूप माँ है, महिला है, ममता, हिम्मत, लज्जायुक्त शक्ति का नाम महिला है। चार दीवारी व बंधन में रहने वाली महिलाएँ आज अंतरिक्ष तक पहुँच गईं, महिलाओं ने हर क्षेत्र में विकास किया है।

अध्यात्म में भी महिलाएँ आगे रहती हैं। महिलाएँ अपने सद्-संस्कार, सद्चरित्र, सद्व्यवहार के द्वारा समाजोत्थान के कार्य करें। महिलाएँ संस्कारी हैं तो घर-परिवार भी संस्कारी होगा। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत व मुनि परमानंद जी ने विचार व्यक्त किए।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

साधु के जीवन में त्याग के साथ...

(पृष्ठ २ का शेष)

साधु का दायित्व है, व्याख्यान देना, तत्त्व को बताना। लोगों को लाभ मिल सकता है। शास्त्रकार ने कहा है कि श्रमण महान साधुओं की पर्युपासना करने से अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं। रोहिणिये चोर के कानों मे प्रभु महावीर की वाणी पड़ी और उसका मार्ग प्रशस्त हो गया। साधु के जीवन में त्याग के साथ ज्ञान भी हो तो, सोने पे सुहागा वाली बात है।

सत्संगति बहुत कल्याणकारी हो सकती है। साहित्य की भी सत्संगति हो। मीडिया में भी सत्संगति हो। अच्छों की संगति करते रहें। अच्छा सुनना, अच्छा देखना और अच्छा बोलना व अच्छा सोचने से सद्गुणों का विकास हो सकता है। रास्ता अच्छा मिल सकता है। हमें अपने जीवन में अच्छों की संगत में रहने का प्रयास करना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री जी के स्वास्थ्य की चित्त समाधि हेतु पूज्यप्रवर ने मंत्र जप करवाया। साध्वी रतनश्री जी एवं सहवर्तिनी साध्वियों ने गीत व भावों की प्रस्तुति पूज्य चरणों में की।

पूज्यप्रवर के अभिनंदन में दिल्ली की अन्य सभाओं की ओर से रमेश जैन (उत्तम नगर), अजित जैन (नांगलोई), पश्चिम विहार से श्यामलाल जैन एवं रोहिणी से समूह गीत मदनलाल जैन द्वारा प्रस्तुतियाँ दी गई। बालक मंथन ढेलड़िया ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आशा... जो अधूरी रह गई

❑ शासनश्री साध्वी विमलप्रज्ञा ❑

१७ मार्च, २०२२ के दिन जैसे ही इस अनचाही सूचना ने कानों में दस्तक दी—शासनमाता हमारे बीच नहीं रही, सुनते ही एक बार तो सांसे रुक गई। मन को विश्वास नहीं हुआ- क्या यह सच है?

कुछ सप्ताह पूर्व जिस अमृतायन में खुशियों का माहौल था। अमृतायन की हर दिवार उनके कर्तृत्व और व्यक्तित्व को बयां कर रही थी। जैन विश्व भारती का पूरा परिसर शासनमाता के जयकारों से गूंज उठा था। क्या वह विराट व्यक्तित्व हमारी आंखों से ओझल हो गया?

नहीं-नहीं! प्रकाश कभी बुझता नहीं, हवा कभी थमती नहीं, आकाश कभी तिरोहित नहीं होता, वैसे ही महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्रीजी के जीवन के उजले पृष्ठों को समय की प्रचंड धारा कभी मिटा नहीं सकती। उनके तेजस्वी जीवन की आभा कभी मंद नहीं पड़ सकती।

उनके व्यक्तित्व का हर पहलू हमें प्रेरित करता है, विद्वता प्रभावित करती है, विनम्रता रोमांचित करती है, अनंत ऊर्जा हमारे भीतर उत्साह का संचार करती है और अप्रमत्तता हमें विस्मित करती है।

हमने अनुभव किया- स्वयं वेदना ने उनकी अप्रमत्तता को सलाम कर लिया। वेदना के क्षणों में उन्होंने दूसरों की वेदना को सहलाया। अपनी वेदना को गौण कर दूसरों की समस्या का समाधान किया। 'वेद पढ़ना आसान है किंतु दूसरों की वेदना को पढ़ना बहुत कठिन कार्य है।' महाश्रमणीजी ने इस कठिन कार्य को भी बहुत सहजता से संपादित किया। हम सबको बोध पाठ मिला कि वेदना को कैसे सहन करना चाहिए।

वे चाहे स्वस्थ हो या अस्वस्थ, उनके जीवन का एक भी दिन ऐसा नहीं गया जहां प्रातः काल समय पर स्वाध्याय का क्रम प्रारंभ न हुआ हो। जब साध्वियों का वाचन प्रारंभ होता तब दूसरों को यह अहसास नहीं होता कि आप किसी गंभीर बीमारी से जूझ रही हैं। सारे कार्य नियमित चलते। अंगुलियों में थमी लेखनी निर्बाध गति से चलती रहती। शारीरिक कठिनाई उसे रोक नहीं सकी। इसी कारण उन्होंने संघ भाल पर साहित्य सर्जन का कीर्तिमान रच दिया।

उन्होंने कितने रुके चरणों की गतिमान बनाया। रुकी अंगुलियों को विकास का पथ दिया। निराश मानस में आशा का संचार किया। महाश्रमणीजी की अनुकंपा ने मुझे भी समय-समय पर विकास का आकाश दिया।

२२ जनवरी सन् २०१६ का घटना प्रसंग है। रात्रिकालीन अर्हत वंदना के बाद हम सभी साध्वियां महाश्रमणीजी की सन्निधि में बैठी थी। महाश्रमणीजी ने साध्वीश्री राजीमतीजी की आत्मकथा के लिए पुरोवाक् लिखा। वह हम सब साध्वियों को सुनाया। पुरोवाक् लिखने की चर्चा चल रही थी। अचानक साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया यदि विमलप्रज्ञाजी अपनी आत्मकथा लिखें तो हम उसमें अपना पुरोवाक् अवश्य देंगे। मेरा रोम-रोम कंपित हो गया। मैंने निवेदन किया- यदि आपका आशीर्वाद होगा तो अवश्य ही मैं इस कार्य को सफल कर पाऊंगी। मैंने कार्य प्रारंभ कर दिया। कार्य संपन्नता की ओर था। अचानक समीक्षा परिषद में यह निर्णय हुआ अवस्था के ७२ वर्ष पूरे हुए बिना आत्मकथा बाहर नहीं आ सकती। मैंने सोचा- छापर चतुर्मास में मेरा यह कार्य हो जाएगा। किसने सोचा यह विराट व्यक्तित्व हमारी आंखों से ओझल हो जाएगा। मेरी आशा अधूरी रह जाएगी।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति

महिमा माप न पावाँ

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

श्रद्धा रा म्है फूल चढावां, सतीशेखरा रा गुण गावाँ,
जय धुँकार लगावाँ, शासनमाता री,
जय हो, जय हो, जय हो शासन मातारी।।
।। स्थाईपद।।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, अनशन करके जीती बाजी,
मूरत नित उठ ध्यावाँ, शासन---।।१।।

तीन गुराँ री सेवा साधी, बाँरी दृष्टि सदा आराधी,
बलिहारी म्हैं जावाँ, शासन---।।२।।

कितां-कितां रा जन्म सुधारया, पथ दर्शन दे कष्ट निवारया,
करुणा नहीं भुलावाँ, शासन---।।३।।

अगणित विशेषतावाँ थांरी, जीवन मानो गुण फुलवारी,
म्हैं भी कुछ अपनावाँ, शासन---।।४।।

महाश्रमण सान्निध्य दिरायो, चिहुं दिशि यश झंडो फहरायो,
(श्री गुरुवर) महिमा माप न पावाँ, शासन---।।५।।

लय : गंगा मानो खुद चल आई---

नारी जाति का गौरव बढ़ाया

● मुनि सुमति कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में व्यवस्था संचालन की दृष्टि से साध्वीप्रमुखा का पद एक महत्त्वपूर्ण पद है। आज तक हुई आठ साध्वीप्रमुखाओं में से इस पद को सर्वाधिक प्रलंब समय तक सुशोभित किया—असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने सदैव ही नारी जाति का गौरव बढ़ाया। उनके इस महनीय कार्य की एक सशक्त माध्यम बनी—साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा। आदरास्पद साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपनी धीरता, गंभीरता, आगम भक्ति, गुरुभक्ति, शासनभक्ति, स्वाध्याय रसिकता, श्रुताराधना, समता, ममता, सौम्य व्यवहार, आचार निष्ठा, गुणग्राहकता, नेतृत्व क्षमता आदि अनेकों-अनेकों उच्च कोटि के गुणों के द्वारा इस पद की गुरुता को शिखरों पर चढ़ाया। वे वस्तुतः आचार्यश्री तुलसी की कृति थी। अपने कर्तृत्व के द्वारा उन्होंने सदैव ही अपने व्यक्तित्व को निखारा। परिणामतः असाधारण साध्वीप्रमुखा, शासनमाता जैसे संबोधन सहज ही उनके व्यक्तित्व के साथ जुड़ते गए।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मुझे सदैव ही उनकी कृपा प्राप्त होती है। शासन गौरव मुनि ताराचंदजी स्वामी के साथ जब-जब भी उनकी उपनिषद होती, मैं भी प्रायः साथ में ही रहता। 'संघ की तेजस्विता कैसे बढ़े' इस बिंदु पर उनकी तड़फ को देखकर मैं अवाक् रह जाता। समय-समय पर उनकी प्रेरणा मुझे मिला करती थी।

जीवन के संध्याकाल में, जयपुर तथा बीदासर में, मैंने निकटता से उन्हें देखा। मेरा मानना है कि अपनी कष्ट सहिष्णुता तथा समता के द्वारा निश्चित ही उन्होंने घोर कर्मों की निर्जरा की है।

उस महान विभूति ने जो आदर्श स्थापित किया, उसका मैं अनुसरण करूँ तथा वह परम आत्मा शीघ्र ही परमात्मा बनें, यही उनके प्रति मंगलकामना।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

पीलीबंगा।

रूपेश सुराणा के नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन विधि से जैन संस्कारक कमलापत द्वारा संपन्न करवाया गया। इस अवसर पर तेयुप के संरक्षक हनुमान सुराणा एवं महासभा के आंचलिक प्रभारी देवेंद्र बांठिया उपस्थित रहे। तेयुप के अध्यक्ष राकेश नाहटा ने रूपेश सुराणा को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

पाणिग्रहण संस्कार

सूरत।

सेमड़ निवासी, सूरत प्रवासी प्यारचंद पुनमिया के सुपुत्र अभय पुनमिया का शुभ पाणिग्रहण संस्कार नान्देशमा निवासी माणकचंद जैन की सुपुत्री संगीता जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा, हिम्मत बम्ब ने मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किया।

प्यारचंद, माणकचंद व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों एवं उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप के मंत्री अभिनंदन गादिया ने दोनों परिवारों का आभार व्यक्त किया और मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ कोलकाता।

जोधपुर प्रवासी कमलचंद बैद के सुपुत्र विकास एवं साउथ-कोलकाता प्रवासी स्व० नरेंद्र राज मेहता की सुपुत्री सौभाग्य स्मृति का विवाह जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप के संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं प्रदीप सिंघी ने विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

परिषद के अध्यक्ष अमित पुगलिया द्वारा परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया।

विवाह संस्कार

जयपुर।

निर्दोष कुमार जैन के सुपुत्र नितेश लुनिया का विवाह संस्कार सुमन बैद की सुपुत्री पूर्वा बैद के साथ संस्कारक राजेंद्र बांठिया ने मंगल मंत्रोच्चार एवं संपूर्ण विधि का विवेचन करते हुए जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़, मंत्री सुरेंद्र नाहटा, जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद की उपस्थिति में दोनों परिवारों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

उदयपुर निवासी, सूरत प्रवासी लक्ष्यप्रताप सिंह के सुपौत्र व कमल सिंह तलेसरा के सुपुत्र नमन-ममता तलेसरा के प्रांगण में कन्या धन का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू ने संपूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

संस्कारक की प्रेरणा से सभी ने त्याग-प्रत्याख्यान किए। कमल सिंह ने उपस्थित पारिवारिकजन का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

जयपुर।

रचना सेठिया सुपुत्री मंजूलता-कन्हैयालाल सेठिया के प्रतिष्ठान के तृतीय स्टोर का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद ने परिवार जनों को मंगलभावना पत्रक भेंट किया। इस अवसर पर जनमानस व पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

✦ *चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बीते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

जैन-योग में कुंडलिनी

पृष्ठरज्जु में बह रही, सदा सुषुम्ना शान्त।
ज्ञान-केंद्र ऊपर सुखद, नीचे शक्ति नितांत।।
शक्ति-केंद्र के पास है, कुंडलिनी का स्थान।
तेजोलेश्या लब्धि या, तैजस-तन अभिधान।।
सुप्त और जागृत उभय, कुंडलिनी के रूप।
योगरसिक नर समझते, इसका सही स्वरूप।।
कुंडलिनी की साधना, बन जाती अभिशाप।
उचित मार्ग-दर्शन बिना, मिलता है सन्ताप।।
इसको जो नर साधता, लगती दीर्घ समाधि।
वृद्धि रुके नख केश की, विगलित आधि-व्याधि।।
द्विविध लब्धि तेजोमयी, विपुल और संक्षिप्त।
सुप्त शक्ति संक्षिप्त है, विपुल तेज से दीप्त।।

प्रश्न : योग का क्षेत्र जाने-अनजाने अनेक रहस्यों का क्षेत्र है। जो साधक गहरे पैठे हैं, उन्होंने अज्ञात रहस्यों को खोजा है, पकड़ा है और अपनी साधना से नए आयामों क उद्घाटन किया है। कुंडलिनी भी योग का एक रहस्यपूर्ण तत्त्व है। जैन आगम इस संबंध में मौन हैं। जैन-योग की दृष्टि से कुंडलिनी शक्ति है या नहीं? यदि है तो वह कहाँ है?

उत्तर : जैन आगम साहित्य में कुंडलिनी शब्द का उल्लेख नहीं मिलता। उत्तरवर्ती जो साहित्य तंत्र-शास्त्र या हठयोग से प्रभवित है, उसमे इसका प्रयोग उपलब्ध है। कुंडलिनी एक रहस्य अवश्य है, किंतु जैन आगमों में इसके स्वरूप की विस्तृत चर्चा है। नाम का भेद अवश्य है, पर उसके अस्तित्व को नकारने जैसी कोई बात नहीं है। यौगिक उपलब्धियों में कुंडलिनी को एक शक्ति के रूप में स्वीकृति मिली हुई है। जैन-योग में भी वह एक विशिष्ट शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। वहाँ उसका नाम तेजोलेश्या या तेजोलब्धि है।

हमारे शरीर में मुख्य रूप से तीन प्राणप्रवाह हैं। मध्यवर्ती प्राणप्रवाह पृष्ठरज्जु के भीतर सुषुम्ना में प्रवाहित होता है। सुषुम्ना के नीचे शक्ति-केंद्र है। सुषुम्ना शीर्ष के ऊपर ज्ञान-केंद्र है। ये दोनों केंद्र सुषुम्नासेतु से जुड़े हुए हैं। शक्ति के बिना ज्ञान का विकास नहीं होता और ज्ञान के बिना शक्ति का सदुपयोग नहीं होता। इसलिए ये दोनों केंद्र और इनका मध्यवर्ती स्थान शरीर का महत्त्वपूर्ण भाग है। साधना की दृष्टि से सभी साधना-पद्धतियों में इनकी उपयोगिता को स्वीकृत किया गया है। शक्ति-केंद्र के पास एक अैर ऊर्जा-भंडार है। इसी स्थान को कुंडलिनी का स्थान माना जा सकता है। प्रेक्षाध्यान की पद्धति में तेजोलेश्या, तेजोलब्धि और तैजस-शरीर—ये तीन बहुत रहस्यमय शब्द हैं। कुंडलिनी का रहस्य इन्हीं में खोजा जा सकता है।

तेजोलब्धि के दो रूप हैं—सुप्त या निष्क्रिय और जागृत या सक्रिय। जिस समय यह शक्ति सुप्त या निष्क्रिय होती है, वृत्तियाँ उदात्त नहीं बन सकती। वृत्तियों के उदात्तीकरण के लिए भी शक्ति की अपेक्षा रहती है। शक्तिहीन आदमी साधारण काम भी नहीं कर सकता, फिर वृत्तियों के उदात्तीकरण जैसे महान काम तो हो भी कैसे सकता है? तैजस-शक्ति के जाग्रत या सक्रिय होने पर उसके उपयोग में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। विद्युत जब तक तरों में प्रवाहित रहती है, वह गर्मी में ठंडक दे सकती है, सर्दी में ताप दे सकती है, अंधकार में प्रकाश कर सकती है और बड़ी-बड़ी मशीनों को चला सकती है। किंतु तारों के नियंत्रण से बाहर होकर वह अकल्पित नुकसान भी पहुँचा सकती है। इसी प्रकार उचित दिशा में प्रयुक्त तैजस-शक्ति वरदान बनती है तो उसका गलत दिशा में प्रयोग होने पर वह अभिशाप भी बन सकती है। इस दृष्टि से शक्ति-केंद्र के साथ ज्ञान-केंद्र को जाग्रत करना जरूरी है। ऊपर के केंद्र जाग्रत न हो तो नीचे के केंद्रों का जागरण बहुत बड़ा खतरा है। इसलिए इस सारी प्रक्रिया में गुरु का मार्ग-दर्शन आवश्यक है। उचित मार्ग-दर्शन के अभाव में कठिनाइयों की उपस्थिति को टाला नहीं जा सकता।

प्रश्न : साधना की दृष्टि से गुरु कैसा होना चाहिए? गुरु की कसौटी पुस्तकीय ज्ञान है? अनुभव का ज्ञान है? अथवा साधना है?

उत्तर : यह ऐसा विषय है, जिसमें पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर गुरु की अर्हता का अंकन नहीं हो सकता। साधनाशील अनुभवी व्यक्ति ही गुरु की महत्त्वपूर्ण भूमिका को कुशलता से निभा सकता है। जिस प्रकार अनुभवी डॉक्टर की देखरेख में कराई गई चिकित्सा सफल होती है, उसी प्रकार अनुभवी गुरु की सन्निधि में की गई साधना ही अनुकूल परिणाम ला सकती है। डॉक्टर दवा देता है और उसका रिएक्शन होने पर, रोग में उभार आने पर उसका प्रतिकार भी जानता है। दवा-जनित प्रतिकूल प्रतिक्रिया को वह दूसरी दवा देकर शांत कर देता है। अनुभवी गुरु भी साधक की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति का अध्ययन करते रहते हैं। कोई भी प्रयोग उलटा न पड़े, इस दृष्टि से उनकी सतर्कता का बहुत मूल्य है।

प्रश्न : योग की कई पुस्तकों में कुंडलिनी का स्वरूप कुंडली मारकर बैठी हुई सर्पिणी से उपमित किया गया है। आपने इस संदर्भ में जिस तैजस-शक्ति का निरूपण किया, क्या वह भी इसी रूप में है?

उत्तर : सर्पिणी एक रूपक है। जिस प्रकार साँप टेढ़ा-मेढ़ा चलता है, वैसे ही हमारी सुषुम्ना नाड़ी का आकार टेढ़ा-मेढ़ा है। सर्पिणी जब कुंडली की अवस्था में रहती है, तब शांत रहती है, हमारी तैजस-शक्ति भी निष्क्रिय या सुप्त रहती है, तब उसकी वही स्थिति होती है। सर्पिणी को छेड़ दिया जाए और वह क्रुद्ध हो जाए तो बड़ी खतरनाक प्रमाणित होती है। इसी प्रकार शक्ति जब ऊपर की ओर ऊर्ध्वारोहण करती है, तब उसे सही रास्ता नहीं मिलता है तो वह कष्टकर हो जाती है। तैजस-शक्ति का प्रवाह यदि दाएँ और बाएँ चला जाता है तो दाह जैसी प्राणघातक बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। साधक को शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के खतरों से जूझना पड़ता है। कभी-कभी इससे पागलपन भी आ जाता है। इसलिए कुंडलिनी को साधते समय अथवा तैजस-शक्ति को ऊपर ले जाते समय बहुत सावधानी की अपेक्षा रहती है।

तैजस-शक्ति एक प्रकार की ऊर्जा है। वह भोजन करने से उत्पन्न होती है। तैजस-केंद्र भी प्राण-ऊर्जा का उत्पादक है। तैजस-शरीर से जो विकिरण होते हैं, उनसे प्राणधारा सक्रिय होती है। हठयोग में शरीर की जिस शक्ति को कुंडलिनी कहा है, वह जैन-योग की तैजस-शक्ति ही है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(६७)

कल दिवाली थी भले ही घर तुम्हारे
किंतु मेरे घर दिवाली आज आई
तम हरण कर प्रात को रोशन किया है
तेज के हे देवते! तुमको बधाई।।

कल हुई पूजा निहित था स्वार्थ उसमें
आज है परमार्थ की आभा सुहानी
कल मिला जो तेज था उत्ताप उसमें
आज है जो चाँदनी उसका न सानी
विषय शब्दों का नहीं यह दिवस पावन
मौन मन की धड़कनें भी बुदबुदाई।।

तेल दीयों में भरें क्यों व्यर्थ ही अब
रोशनी फैली धरा पर एक अनुपम
फूल कगज के खिलाएँ क्यों धरा पर
महक खुशियों की लिए तुम दिव्य उपवन
लग रही सूनी युगों से बिन तुम्हारे
आज वह दुनिया तुम्हें पा जगमगाई।।

(६८)

हमने अपना सब कुछ किया निछावर अपने मन से।
अब क्या है अवशेष जिसे अर्पण कर तुम्हें रिझाते।।

नभ का कर निर्माण तुम्हीं ने दी हैं सबको पाँखें
इसीलिए हर प्राण-विहग तुम पर ही दृष्टि टिकाए
उजली-उजली किरणों ने आलोक भरा नयनों में
सूनी-सी गोदी संध्या की तुम उसमें उदियाये
कदमों की आहट भी मुदित बना देती है सबको
पलकें में बंदी बनकर तुम क्यों जग को भरमाते।।

वीरानी राहों में भटक गए हैं चरण हमारे
मिला नहीं सहयोग किसी का अपने हुए पराए
जो प्रकाश का सोता बहता आया पास तुम्हारे
मुड़ जाए इस ओर सहज हम ऐसी ऊर्जा पाएँ
है स्वार्थी संसार समूचा तुम हो उससे ऊपर
मिला तुम्हें जो सत्य उसे क्यों हमसे अजा छिपाते।।

इमरत से परिपूर्ण रहा जीवन-घट देव! तुम्हारा
किंतु हमारा भाजन रीता अब तो उसको भर दो
बिलख रही है मूक चेतना उसको मुखर बनाओ
साध्य सिद्ध हो शीघ्र देवते! ऐसा सुंदर वर दो
सागर को पानी पर भी ना बुझती प्यास हमारी
बूँद-बूँद रसपान करा तुम कैसे उसे बुझाते।।

(क्रमशः)

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

शासनमाता के महाप्रयाण पर भावभीनी श्रद्धांजलि

बदली जमीं आसमां बदला, अब सब कुछ बदला-बदला है।
बदल गई दुनिया सपनों की, क्रूर नियति ने हमें छला है।।

✻ सादर श्रद्धार्पण ✻

स्व. श्रीमती बिमलादेवी एवं स्व. पदमचंदजी हीरावत

की पुण्य स्मृति में

सुशील-सरिता, सुनील-सुनिता, संदीप-बबीता, सौरव-प्रियंका हीरावत

(रतननगर-कोलकाता)

JG JiGO POWER TO PERFORM

Hirawat Electricals

32, Ezra Street, Room #518, Kolkata-700001
M.: 8336022220, E-MAIL: hirawat@jigoindia.com, www.jigoindia.com

✦ *विद्या संस्थान में जीवन-विज्ञान और जैनिज्म का भी अध्ययन होता रहे और यह नैतिक, धार्मिक विकास करता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

नमन पुण्यात्मा को...

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

जन्म
22 जुलाई 1941
कोलकाता

महाप्रयाण
17 मार्च 2022
दिल्ली

उस दिव्य ज्योति को नमन करें
जिसने जग का तम दूर किया।
आलोक बिखेरा कण-कण में
ज्योतिर्मय जीवन स्वयं जीया।।

* सादर श्रद्धासुमन *

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

*** प्रबंध मंडल 2021-23 ***

पंकज डागा अध्यक्ष	रमेश डागा उपाध्यक्ष-I	जयेश मेहता उपाध्यक्ष-II	पवन मांडोत महामंत्री

अनंत बागरेचा सहमंत्री-I	भूपेश कोठारी सहमंत्री-II	भरत मरलेचा कोषाध्यक्ष	श्रेयाँस कोठारी संगठन मंत्री	संदीप कोठारी निवर्तमान अध्यक्ष

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

विनम्र श्रद्धांजलि

अनजाने से बीहड़ पथ में
हम सबको चलना सिखलाया

श्रद्धासुमन समर्पित उनको
तम में भास्वर दीप जलाया ॥

KBC Investments

1, India Exchange Place, Kolkata-1

नोरतमल राजेश राकेश चोरड़िया (श्रीडूंगरगढ़)

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

एक उजली छवि
जन-जन की आंखों में बसी अलौकिक छवि
जिसे देखकर मन कभी भरता नहीं था
अचानक यों तिरोहित हो गई
जैसे एक विराट चेतना शून्य में खो गई।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट

संजयकुमार सिंघी
अध्यक्ष

जुगराज दूधोड़िया
मुख्य न्यासी

प्रवीण पगारिया
मंत्री

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022

✦ *व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न हो, उसमें तल्लीन होना व एकाग्र होना भावक्रिया है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

जय भिक्षु जय तुलसी जय महाप्रज्ञ जय महाश्रमण

शासनमाता से हुआ, धन्य बैद परिवार।
शासनसेवा नित करें, करो शक्ति संचार।।

* भावभीनी श्रद्धांजलि *

सदासुखजी बैद परिवार, लाडनूं
(शासनमाता का संसारपक्षीय परिवार)
कमलसिंह बैद परिवार, प्रकाश-प्रमोद बैद परिवार

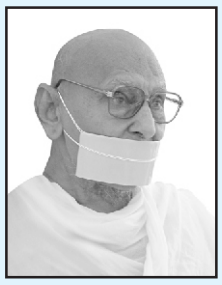

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(पिछला शेष) इससे मुक्त होकर ही साधक व्रत–विरति की ओर अग्रसर होता है। विरति का अर्थ है–बाह्य विषयों से विरक्त होना। जिसका सीधा अर्थ है–वैराग्य यानी पदार्थों के प्रति जो अनुरक्ति है, उससे दूर होना। पदार्थों का आकर्षण, सुख-सुविधा का आकर्षण आत्मा के प्रति, परम तत्त्व के प्रति आकृष्ट नहीं होने देता। दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं। विरत अवस्था में पदार्थों-विषयों में आसक्ति छूट जाती है। आत्मा की दिशा में बढ़ने का मार्ग खुल जाता है। लेकिन वह मार्ग पूर्ण नहीं खुलता। मन कभी पदार्थों की ओर तथा कभी आत्मा की ओर चलता रहता है। इसके लिए साधक को बड़ा कठोर साहसिक कदम उठाना होता है। अपने मन पर उसे प्रहरी बनकर खड़ा रहना होता है, प्रतिपल जागृत होकर आगे बढ़ने का प्रयास जारी रखना होता है। इस अस्थिरता का कारण होता है–प्रमाद। प्रमाद का आध्यात्मिक भाषा में अर्थ है–आत्मा के प्रति अनुत्साह, विषयों के प्रति उत्साह। प्रमाद की मुक्ति के लिए अप्रमाद का अवलंबन अपेक्षित है।

अनन्य के प्रति आकर्षण इतना सघन होना शुरू हो जाता है, तब उसे अन्य किसी बात का ख्याल नहीं रहता। वह सतत उसी में डूबा रहने लगता है। यह धारा जब विकास की अग्रिम अवस्था को छूने लगती है तब वह दो भागों–दो श्रेणियों में विभक्त हो जाती है। विकास की दृष्टि से अप्रमाद का स्थान सातवाँ है। सातवें से दो पथ बनते हैं–एक उपशम श्रेणि का और दूसरा क्षायक श्रेणि का। उपशमन श्रेणि से जाने वाले ग्यारहवें में आकर रुक जाते हैं। जो साधक क्षयक श्रेणि के पथ से प्रयाण करते हैं वे सीधे दसवें से बारहवें में आरूढ़ हो जाते हैं। इसके बाद तेरहवें व चौदहवें गुणस्थान में प्रवेश कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, सहजावस्था में अवस्थित हो जाते हैं। यह आत्मा के पूर्ण विकास की स्थिति है।

गुणस्थान चौदह हैं। गुणस्थान है–आत्मा के क्रमिक विकास का पथ। अविकास का कारण है–कर्म। गीता की दृष्टि में प्रकृति। प्रकृति की तीन अवस्थाएँ हैं–सत्त्व, रज और तम। तीनों की अतीत अवस्था है। गुणातीत। करण शरीर मूल है। इसी के कारण-स्थूल शरीर का निर्माण होता है। गुणातीत अवस्था में कारण शरीर की भी समाप्ति हो जाती है। जैसे-जैसे साधक साधना की उच्च अवस्था में या ध्यान की गहराई में आगे से आगे आरूढ़ होता रहता है वैसे-वैसे उसका मोह क्षय होता चला जाता है और वह पूर्ण विशुद्ध दशा में स्थित हो जाता है।

मोह आत्मा को विकृत करता है। उसके राग और द्वेष–ये दो रूप हैं। इन दोनों के चार रूप बनते हैं–क्रोध, अहंकार, माया और लोभ। गुणस्थानों के आरोहण में क्रमशः ये शिथिल व नाम शेष होते चल जाते हैं। ग्यारहवें गुणस्थान में इनका संपूर्ण उपशमन होता है, नाश नहीं होता। बारहवें में संपूर्ण विलय-क्षय हो जता है।

(२७) अमनोज्ञसमुत्पादः, दुःखंभवति देहिनाम्।
समुत्पादमजनाना, न हि जानन्ति संवरम्।।

अनमोज्ञ स्थिति का समुत्पाद–उत्पत्ति दुःख है। जो इस समुत्पाद को नहीं जानते, वे संवर–दुःख निरोध को भी नहीं जानते।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

दान धर्म

प्रश्न ८ : लोकोत्तर दान के कितने प्रकार हैं?
उत्तर : लोकोत्तर दान के तीन प्रकार हैं–
(१) ज्ञान दान – तत्त्व ज्ञान कराना व शुद्ध मार्ग पर व्यक्ति को प्रस्थापित करना।
(२) संयति दान – सुपात्र को प्रासुक-निर्जीव द्रव्य देना।
(३) अभय दान – षट्कायिक जीवों की हिंसा का परित्याग कराना।

प्रश्न ९ : गोदान, भूमिदान आदि लौकिक हैं या लोकोत्तर?
उत्तर : गोदान, भूमिदान आदि लौकिक हैं।

प्रश्न १० : सुपात्र से क्या तात्पर्य है?
उत्तर : जीवों की दो कोटियाँ हैं–(१) मुनि, (२) गृहस्थ। गृहस्थ असंयमी व संयमासंयमी (श्रावक) दोनों होते हैं। मुनि संयमी होते हैं, वे ही सुपात्र कहलाते हैं।

प्रश्न ११ : सुपात्र की कसौटी क्या है?
उत्तर : जो पाँच महाव्रतों का निरतिचार पालन करते हैं, वे सुपात्र हैं। उनके अतिरिक्त सभी भिक्षा देने की दृष्टि से अपात्र हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य अकलंक

नेमिदत्त के आराधना कथाकोष के अनुसार कलिंग देश के रत्नसंचयपुर में भट्ट अकलंक का बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ नरेश हिमशीतल की सभा में हुआ था। इस शास्त्रार्थ का पूर्व घटना-प्रसंग इस प्रकार है–नरेश हिमशीतल की रानी मदनसुंदरी जैन धर्म में आस्था रखती थी। वह अष्टाह्निक पर्व के अवसर पर एक दिन बड़ी धूमधाम के साथ जैन रथयात्रा निकालना चाहती थी। उस समय वहाँ पर बौद्ध गुरुओं का अधिक प्रभाव था। उन्होंने नरेश हिमशीतल को एक शर्त के साथ अपने विचारों से सहमत कर लिया कि किसी जैन गुरु के द्वारा बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने पर भी यह रथयात्रा निकल सकती है। रानी राजा के इन विचारों से चिंतित हुई। संयोग से यह बात भट्ट अकलंक के पास पहुँची। वे शास्त्रार्थ करने के लिए वहाँ आए। नरेश हिमशीतल की सभा में उनका बौद्धों के साथ छह महीनों तक शास्त्रार्थ चला। जैनशासन की उपासिका चक्रेश्वरी देवी ने एक दिन भट्ट अकलंक से कहा–परदे के पीछे कोई और बौद्ध गुरु नहीं अपितु घट में स्थापित तारादेवी शास्त्रार्थ कर रही है। अतः उसके द्वारा कहे गए वाक्यों को पुनः पूछने पर तारादेवी की पराजय और तुम्हारी विजय है। दूसरे दिन भट्ट अकलंक ने वैसा ही किया। तारादेवी अपने द्वारा कहे गए वाक्यों को अकलंक द्वारा पुनः पूछने पर न दोहरा सकी। अकलंक ने तत्काल परदे को खींचकर घड़े को ठोकर से तोड़ डाला। घट का स्फोट होते ही सारा रहस्य उद्घाटित हो गया। बौद्धों की भारी पराजय और अकलंक की विजय हुई। जैन रथयात्रा धूमधाम से संपन्न हुई एवं जैनशासन की महत्ती प्रभावना हुई।

समय-संकेत–आचार्य अकलंक वी०नि० की १४वीं (वि० की ६वीं) शताब्दी के विद्वान् थे।

अजेय वादशक्ति, अतुल प्रतिभा-बल एवं मौलिक चिंतन पद्धति से आचार्य अकलंक भट्ट कोविद-कुल के अलंकार थे एवं युग-प्रवर्तक आचार्य थे। उनको जैन न्याय का पिता कहा जाता है।

आचार्य हरिभद्र

जैन परंपरा में हरिभद्र नाम के भी कई आचार्य हुए हैं। प्रस्तुत हरिभद्रसूरि सबसे प्राचीन हैं और याकिनीमहत्तरासूनु नाम से प्रसिद्ध हैं। सैकड़ों वर्षों के बाद भी हरिभद्रसूरि का जीवन प्रकाशमान नक्षत्र की तरह चुक रहा है। उनमें जैसे उदार मानस का विकास हुआ वैसे विरलों में हो पाता है। उन्होंने प्रतिपक्षी के लिए महर्षि, महामुनि जैसे सम्मानसूचक शब्दों का प्रयोग किया है। उनका वह उदात्त घोष आज भी सुविश्रुत है–

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेष : कपिलादिषु।
युक्तिमद्वचनं यस्य, तस्यकार्यः परिग्रहः।।

वीर-वचन में मेरा पक्षपात नहीं। कपिल मुनियों से मेरा द्वेष नहीं। जिनका वचन तर्कयुक्त है–वही ग्राह्य है।

आचार्य हरिभद्र की कृतियों में प्राप्त उल्लेखानुसार उनके दीक्षा गुरु विद्याधर-कुल-तिलकायमान जिनदत्त थे।

आचार्य हरिभद्र का जन्म चित्रकूट निवासी ब्राह्मण परिवार में हुआ। चित्रकूट नगर (चित्तौड़) नरेश जितारि के राज्य में उनको राजपुरोहित का स्थान मिला।

राजपुरोहित हरिभद्र को अपने विद्याबल पर अतिशय गर्व था। 'बहुरत्ना वसुंधरा' यह वसुंधरा विविध रत्नों को धारण करने वाली है, यह बात उन्हें अवैज्ञानिक लगी। उनकी दृष्टि में कोई भी योग्यता उनकी तुला के फलक को उठाने में समर्थ नहीं थी।

हरिभद्र पंडितों में अग्रणी थे एवं विवाद-विद्या में भी अपने को अजेय मानते थे। शास्त्र-विशारद विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करने के लिए वे सदा तत्पर रहते थे। पांडित्य के अतिशय अभिमान ने उन्हें असाधारण निर्णय तक पहुँचा दिया था। ज्ञानभार से कहीं उदर फट न जाए, इस भय से वे पेट पर स्वर्णपट्ट बाँधे रहते थे। अपने प्रतिद्वंद्वी की धरती का उत्खनन कर निकाल लेने के लिए कुदाल, जल से खींच लेने के लिए जाल और आकाश से धरती पर उतार लेने के लिए सोपान-पंक्ति प्रतिसमय अपने-कंधे पर रखते थे। जम्बूद्वीप में भी उन जैसा कोई विद्वान् नहीं है, इस बात को सूचित करने हेतु वे हाथ में जम्बूवृक्ष की शाखा को रखते थे। उनका दर्पोन्नत मानस किसी भी व्यक्ति द्वारा उच्चारित वाक्य का अर्थ न समझने पर उसका शिष्यत्व स्वीकार कर लेने को प्रतिबद्ध था। हरिभद्र अपने को इस कलियुग में सर्वज्ञ समझते थे।

(क्रमशः)

✦ *हर व्यक्ति के मन में कुछ होने की कामना हो। इसके लिए कुछ अपेक्षानुसार कठोर जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। जीवन में प्रतिस्रोतगामिता रहे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

बाँटा जग को अमर उजाला

● **साध्वी शरदयशा** ●

शासन माता सदा अमर हैं गूंजे मुख-मुख पर नारा।
तेरापंथगण गणनांगन में दीप्तिमान शाश्वत ध्रुवतारा।।

गुरुवर तुलसी ने निजकर से, बोया बीज बना फलवान।
बरगद सम छतनार बना वो, साधक विहगों का आस्थान।
आध्यात्मिक आलोक अनुत्तर, बाँटा जग को अमर उजारा।।

साध्वीगण को आश्वासन, अपनापन तुमसे सदा मिला।
स्नेहिल सिंचन पाकर तुमसे, कितनों का जीवन बदला।
डगमग-डगमग करते अनगिन, कदमों का तुम बनी सहारा।।

है आदर्श हमारे सम्मुख, तेरे जीवन की पोथी।
युगों-युगों तक हम पाएंगे, तुमसे आध्यात्मिक ज्योति।
पौरुष जिसकी लहर-लहर में, निर्मल-निश्छल गंगाधारा।।

गुरुवरत्रय से आजीवन पाई है, तुमने कृपा आपार।
ज्योतिर्मय गुरुवर सन्निधि में, जोड़ा निज आत्मा से तार।
अथ से इति तक गुरुभक्ति में, लीन रहा हर पोर तुम्हारा।।

लय : प्रभो! तुम्हारे पावन----

अनहद है उपकार

● **साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा** ●

शासनमाता आपरो विरह सह्यो नहीं जाय।
बगिया सींची स्नेह स्यूं क्यूं दीन्ही विसराय।।

पल पल छिन छिन थे करी, साध्वी गण रिछपाल
दुर्गा माँ ज्यूं थे रह्या, बणकर रक्षा ढ़ाल
नेहिल निजरां स्यूं करी, जन-जन री सम्भाल।।१।।

दरिया वत्सलभाव रा, करुणा रा आगार
खूब बढ़ाई सम्पदा, गणलक्ष्मी अवतार
श्रुतदेवी बणकर भर्‌यो शासण रो भंडार।।२।।

मीठी मीठी बात स्यूं, दिल में भरता जोश
सारण वारण सांतरी, देता अभिनव तोष
गूंजे धरती अम्बर में, महाश्रमणी महाघोष।।३।।

गुरु तुलसी स्यूं है मिल्यो, अनमोलो वरदान
पौरुष दीप्यो संघ में, शिखर चढ्यो सम्मान
अमर खजानो गुणरत्नां रो, कियां करां गुणगान।।४।।

तेरापथ री चाँदणी, अनहद है उपकार
पहरायो गुरुवरत्रयी यश कीरत रो हार
असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री मुख रो उपहार।।५।।

लय : स्वामीजी आओ देखल्यो---

आओ शीश झुकाएँ

● **साध्वी मुदितयशा** ●

शासनमाता साध्वीप्रमुखा गौरव गाथा गाएं।
मिली प्रेरणाएं जो तुमसे जीवन पंथ बनाएं

ऋणी रहेगा संघ हमेशा सेवाएं तेरी अनमोल।
हो जाते आश्वस्त हृदय सुन तेरे मधुरिम मंजुल बोल
कार्यकला थी अद्‌भुत तेरी कैसे उसे भूलाएं।

जागरूकता का सुंदरतम उदाहरण तेरा जीवन।
संस्कारों का सिंचन दे महकाएं कितने मन उपवन।
सहज-सुधड़ जीवन शैली जीने की कला सिखाए।।

चिरसंचित पुण्यों का फल गुरुओं की कृपा सवाई।
सतत अमंद अनुत्तर पौरुष वर्धमान पुण्याई
पुण्य और पौरुष की युति को आओं शीश झुकाएं।।

तीव्र वेदना में भी देखी समता सहिष्णुता हरदम
तेरा जीवन भक्ति आत्मानुरक्ति का शुभ संगम
प्रेरक दीपशिखा बन तुमने अनगिन दीप जलाए।

अहोभाग्य गुरुवर की सन्निधि में अंतिम उच्छवास लिया।
गुरुवर के श्रीमुख से आराधन गीतों का श्रवण किया
लाखों में विरला मानव ही ऐसा अवसर पाए।।

लय : जनम-जनम का---

स्मृतियाँ रह-रह आए

● **डॉ० साध्वी सुधाप्रभा** ●

शासनमाता संघ समूचा, तेरी महिमा गाए।
श्रद्धांजलि चरणों में अर्पित, स्मृतियाँ रह-रह आए।।

युगप्रधान महाश्रमण प्रभु ने, संथारा पचखाया।
गुरुवर की शुभ सन्निधि में यह, नव इतिहास रचाया।
नौका पार लगी गुरु कर से, तेरे भाग्य सवाए।।

महाश्रमण गुरुवर ने गण को दी थी शासनमाता।
ज्योतिर्मय माँ से था जन-जन, नई रोशनी पाता।
भक्त तुम्हारे हर-पल, हर-क्षण, तेरा गौरव गाए।।

स्नेह-सिंचन पा तुमसे गण की, कलि-कलि विकसाई।
जहाँ टिके हैं चरण तुम्हारे, वह माटी मुस्काई।
मुस्काता चेहरा नयनों से, ओझल नहीं हो पाए।।

अनगिन प्राणों में माँ तुमने, नूतन प्राण भरे हैं।
पा प्रेरणा तुमसे गण के, तरुवर हरे-भरे हैं।
दो आशीवर गण जगदंबा, गण का मान बढ़ाए।।

इतनी क्या जल्दी थी बोलो? उत्तर कौन बताए।
स्वर्ग-लोक से देना, दर्शन, मन के भाव सुनाएँ।
श्रमणी-गण सरदारां तुमको, सविनय शीश झुकाएँ।।

लय : जनम-जनम का साथ----

आशीर्वर नित चावां

● **साध्वी अणिमाश्री** ●

जावां बलिहारी, जावां बलिहारी, जावां बलिहारी
शासनमाता हिम्मत कर ली।
कर संथारो झोली भर ली।
पीड़ा जनम-जनम री हर ली।

साध्वीप्रमुखा रो पद पायो।
गंगाणै रो सीन सुहायो।
सबरो रोम-रोम हरसायो।।

तीनूं गुरुआं स्यूं इकतारी।
नत-मस्तक मुद्रा थांरी।
सबनै लागे है मनहारी।।

अनशन श्रीमुख स्यूं पचखायो।
गुरुवर माँ रो कर्ज चुकायो।
रोप्यो थे शिवपुर रो पायो।।

घोर असाता में समता भारी।
हर-पल, हर-क्षण निरखी थांरी।
वाह-वाह कनकप्रभा जयकारी।।

थे तो जीवन सफल बणायो।
गण रो गौरव खूब बढ़ायो।
बणग्यो भक्त चरण जो आयो।।

थांरी याद सदाई आसी।
आंख्या आंसूड़ा ढलकासी।
रसना थांरा ही गुण गासी।

'अणिमा' श्रद्धा सुमन चढ़ावै।
चरणां सविनय शीष झुकावै।
थांरो आशीर्वर नित चावै।।

बरतै गण में चोथो आरो।
सुखकर महाश्रमण बरतारो।
नैया भवसागर स्यूं तारो।।

लय : धरती धोरां री---

संथारो कर कर्‌यो कमाल

● **साध्वी मधुरेखा आदि साध्वियाँ** ●

साध्वीप्रमुखा पा हुआ निहाल
संथारो कर कर्‌यो कमाल

पाँच दशक रो वर्तारो दियो किता नैथे सहारो
थांस्यूं सारा हां खुशहाल।।१।।

तन री त्यागी थे ममता, देखी सगला म्हें समता
सही वेदना थे विकराल।।२।।

धीर वीर गंभीर अपार, साध्वीगण मोरो परिवार
वत्सलता री राखी ढ़ाल।।३।।

शासनमाता संबोधन गण वन में बरस्यो सावन
महाश्रमणजी है गणपाल।।४।।

लय : छोटी-छोटी गैय्या

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

उपकृत है संसार

● शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ●
● शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ●

शासनमाता पाई साता संघ बना गुलजार
तेरे बलिदानों से उपकृत है संसार।।

तुलसी की पैनी दृष्टि ने है परखा
एक-एक साध्वी को तुमने माना सरखा
कनकप्रभा कृति गुरु तुलसी की बनी श्रमणी शृंगार।।

तीन-तीन गुरुओं की अनुकंपा पाई
असाधारण प्रमुखा जी गण में छाई
कार्य-कुशलता से इस गण को पहुँचाया उस पार।।

अमृत महोत्सव का स्वर्णिम अवसर आया
शासन माता संबोधन तुमने पाया
महाश्रमण गुरुवर की करुणा रही सदा अनपार।।

अंत समय में गुरु सन्निधि तुमने पाई
घोर वेदना शांत भाव से सह पाई
महाश्रमण की चरण शरण में कया है बेड़ा पार।
भूल कभी नहीं पाएँगे हम जो-जो किए उपकार।।

लय : बार-बार तोहे---

साध्वीप्रमुखा रो उपकार

● साध्वी राकेश कुमारी ●

जय हो जय हो शासनमाता महिमा अपरंपार है
जयनारों के जयघोषों से, भू नभ एकाकार है।
शासनमाता री साध्वीप्रमुखा री,
।।ध्रुव।। जय हो, जय हो, जय हो---

महाउपकारी महाश्रमण गुरु पचक्खयो अनशन तिविहार
जागरूकता स्यूं स्वीकार्यो साध्वीप्रमुखा गण सिणगार
मजबूत मनोबल शूरवीरता कलश चढ़ायो गण शहतीर
तिविहार संथारो करने बदली जीवन री तस्वीर
सदिया याद करेली, साध्वीप्रमुखा रो उपकार।।
जय हो, जय हो, जय हो---

सूनो सूनो गणवन आँगन रीती सारी गगरी है
दर्शन बिन म्हैं वंचित रह्ग्या रह गई बात मन री है
मनहारी मुखमुदा थांरी लागै मोहनगारी है
अधबिच छोड़ चल्यां क्यूं म्हारे न्हैं मुरझाई फुलवारी है
जनम जनम नहीं भूलेगा ओ श्रमणीगण परिवार है।।
जय हो, जय हो, जय हो---

असाधारण शासनमाता श्रीमुख स्यूं पायो सम्मान
त्रयगुरु री आणा आराधी शासनमाता गण री शान
अध्यात्म साधना केंद्र महरौली अनुकंपा भवन में निर्वाण
गण री धड़कन में थे बसग्या, संघ हित करता थे बलिदान
हीरकणी वैडुर्यमणी री चिऊं दिशि जय जयकार है।।
जय हो, जय हो, जय हो---
शासन माता री।।

लय : आओ बच्चो---

भावां रो सागर

● साध्वी राजुलप्रभा ●

शासनमाता शासण रे हिवडे में बसी है
उपकारी थांरी तस्वीर
श्रद्धा सुमन चरणां में समर्पण
बरसावै नैणां भक्ति नीर

कनकप्रभाती कनकप्रभाजी पावन जीवन धारा
अनगिन डगमगती नौकां री थामी थे पतवारां
सिरजण जन-जन रो कर अनूठो दिखलायो भवतीर।।

पौरुष री प्रतिमा परमारथ पथ पर चलणो सिखायो
जो कोइ आयो श्रीचरणां में वत्सल दरियो लहरायो
पल-पल निरझर बह्यो प्रेरणां रो, लाखां री जगी तकदीर।।

गुरु तुलसी री परम कृति रो उपकार हर मन सुमरें
शब्द नहीं हैं भावां रो, सागर आज हृदय में लहरें
दरसण चावां ध्यावां थांने महासतिवर!
हरल्यो नी मनंडे री पीर।।

महाश्रमण गुरुवर किरपा री बरसाई रिझवारी
बीत्यां जो पल चरणां में स्वर्णिम जुड़ गई म्हारी इकतारी
रूप विराट दिखाद्यो शासणमाता! तोड़ जगत जंजीर।।

लय : छोटी सी उमर परणाई

शासनमाता से मिली प्रेरणा

● साध्वी सुनंदाश्री ●

क्या-क्या बताएँ, क्या-क्या सुनाएँ।
शासनमाता से पल-पल मिली प्रेरणाएँ।।

दिन जो बिताए उजले पल वो सुहाने
महाश्रमणी के साये में सुख के खजाने
अंगुली पकड़कर जिसने चलना सिखाया
पांखों में प्राण भरकर उड़ना सिखाया
वात्सल्य भावना के गीत गुनगुनाएँ।।

चाँद सितारे सूरज सारे उगेंगे
पंछी उड़ेंगे हर दिन फूल खिलेंगे
कल-कल बहेगी नदियाँ मौसमी हवाएँ
उमड़ेंगी बादलों की घोर घटाएँ
प्रकृति के आइने में देख मुस्कुराएँ।।

हस्तावलंबन बिन चली ना कदम भर
कसकर कलाई पकड़ी चिकनी डगर पर
अब क्या हुआ कर से जो दामन छुड़ाया
लंबा सफर अकेले पार क्यूँ कराया
सुख सन्निधि शीतल छाया साथ निभाएँ।।

आराध्य देव दृष्टि आराधना कर
ज्ञान वर्धमान करके श्रुत साधना कर
वर्षों प्रवास गुरुकुलवास में किया था
श्रीचरणों का अद्भुत अमृत पिया था
शाश्वत सुख वरण करो तुम, शुभ भावनाएँ।।

सारे संघ की शासनमाता

● साध्वी अनुप्रेक्षाश्री ●

सारे संघ की शासनमाता
साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की अद्भुत जीवन गाथा
सारे संघ की शासनमाता।।

केलवा द्विशताब्दी अवसर, हुई आपरी दीक्षा।
पग-पग पर उत्तीर्ण हुई, गुरु तुलसी करी परीक्षा
विनय समर्पण स्यूं गूंथ्योडी, अथ स्यूं इति तक बाता
सारे संघ की शासनमाता।।

कला, कनकप्रभा स्यूं तो बणग्या साध्वीप्रमुखा
गुरु दृष्टि आराधन में, तिलभर भी नहीं चुका
बढ़तो चढ़तो ही गयो कद, श्रद्धा स्यूं झूकै माथा
सारे संघ की शासनमाता।।

मातृहृदय स्यूं संपोषण पा, भाग्यलता लहराती
टूट्या बिखरया कइयां में, नव विश्वास जगाती
उपकारी, आभार म्हैं सारा, स्मरण करा दिनराता
सारे संघ की शासनमाता।।

विज्ञ विदुषी और विलक्षण, थारी जीवनशैली
हुआ अनुत्तर काम अनेका, बणगी गूढ पहेली
धन्य-धन्य महाश्रमणजी, समता स्यूं वेदी असाता
गुरु सन्निधि रा क्षण बै विलक्षण, पाया शासनमाता।।

लय : जहाँ डाल-डाल पर---

शासनमाता करूँ प्रणाम

● साध्वी प्रमिला कुमारी ●

शासनमाता करूँ प्रणाम, प्रमुखाश्रीजी ज्योतिर्धाम।
आस्था का अभिनव मुकाम, स्मरण करूँ मैं आठोयाम्।।१।।

अमल धवल व्यक्तित्व महान्, संघ धरोवर नव्य निधान।
चरण रहे प्रतिपल गतिमान् चारतीर्थ करता गुणगान्।।२।।

हम सबकी थी रक्षा ढाल, नारी जाति हुई निहाल।
क्यों आया व्याधि भूचाल, सका न कोई उसको टाल।।३।।

महाश्रमणी जी पर है नाज, श्रमणी गण की थी सरताज।
शक्तिशाली थे अल्फाज, नव विकास के नव अंदाज।।४।।

शक्ति स्वरूपा तुम्हें सलाम, पौरुष की गाथा प्रकाम।
ज्ञान चेतना थी अभिराम, तेरापथ में अक्षय नाम।।७।।

संघ मणि श्रद्धांजलि विनत भाव विनयांजलि
अर्पित वह गीतांजलि स्वीकृत हो भावांजलि।।८।।

लय : रघुपति राघव राजा राम---

✦ *व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

शासनमाता की स्मृति सभा का आयोजन

कांदिवली, मुंबई।

तेरापंथ सभा भवन, कांदिवली राजभवन में साध्वी राकेश कुमारीजी, साध्वी मलयविभाजी, साध्वी विपुलयशाजी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभाजी के सान्निध्य में असाधारण साध्वीप्रमुखा शासनमाता संघमहानिदेशिका की स्मृति सभा का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। साध्वी मलयविभाजी ने अंतर भावों को व्यक्त करते हुए कहा–साध्वीप्रमुखाश्री का दृढ़-संकल्प बल, तपोबल, मनोबल-सेवा, समर्पण भाव, विनम्रता, नम्रता, व्यवहार-कुशलता ने साधारण सासध्वीप्रमुखा से असाधारण साध्वीप्रमुखा पद पर स्थापित किया। विवेकशीलता गुरु विश्वास आदि अर्हताओं के बारे में प्रकाश डाला।

साध्वीप्रमुखाश्री ने दृढ़-संकलपबल, विवेकशीलता, सेवा, समर्पण से गुरु विश्वास को जीता और आचार्य महाश्रमण जी ने अर्हताओं का मूल्यांकन करते हुए असाधारण एवं शासनमाता अलंकरणों से अलंकृत किया।

साध्वी विपुलयशाजी और साध्वी चेतस्वीप्रभाजी ने भी भावाभिव्यक्ति अर्पित की। साध्वी राकेश कुमारीजी ने मुमुक्षु कला से कनकप्रभा एवं कनकप्रभा से साध्वीप्रमुखा और साध्वीप्रमुखा से असाधारण शासनमाता तक की संयम यात्रा की रोचक कहानी प्रस्तुत करते हुए कहा–विलक्षण विशेषताओं का अक्षय पुंज, चंदेरी की चमकती चाँदनी तक महाग्रंथ बन गए। जिसे शब्दों के माध्यम से व्याख्यायित करना कठिनतम है। ५० वर्षों तक अनवरत तेरापंथ धर्मसंघ की सार-संभाल कर तेरापंथ के आइने में स्वर्णाक्षरों में हस्ताक्षर कर दिए। तेरापंथ शासन की अनमोल धरोहर असाधारण साध्वीप्रमुखा के युग का अवसान हो गया, जिसे कभी भुलाया नहीं जाएगा। तीन-तीन आचार्यों की दृष्टि का आराधन कर तेरापंथ शासन में कीर्तिमान स्थापित किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष विनोद जैन, तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई अध्यक्षा रचना हिरण, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष के०एल० परमार, तेमम संयोजिका नीता नाहटा (कांदिवली), प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़, मधुर संगायिका मीनाक्षी भुतोड़िया ने गीत की प्रस्तुति कर सभी को भावविभोर कर दिया। गायक रवि ने गीत प्रस्तुत कर श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ० सलौनी, तेरापंथ सभाध्यक्ष जंवेरीलाल नौलखा एवं निर्मला आदि ने अपने भावों को प्रस्तुत कर शासनमाता को श्रद्धांजलि अर्पित की।

योगेश कोठारी ने आभार ज्ञापित किया तथा मंच का संचालन मनीष रांका ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति

किया है कर्मों का क्षय

● **मुनि चैतन्य कुमार 'अमन'** ●

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की आत्मा थी ज्योतिर्मय
करें कामना पाए वो अब मोक्ष नगर सिद्धालय
जय हो जय हो कनकप्रभा
शासनमाता कनकप्रभा।।

असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी प्यारी
महाश्रमणी संघ महानिदेशिका लगती अति मनहारी
पाया संबोधन गुरुवों से, सर्वोत्तम गरिमामय।।

गुरुवर तुलसी-महाप्रज्ञ का पाया उत्तम साया
युग प्रधान गुरु महाश्रमण से जीवन धन्य बनाया
त्रय आचार्यों की पाई है, शुभ दृष्टि मंगलमय।।

श्रद्धा सेवा और समर्पण सौम्य सरस मृदु वाणी
प्रवचन धारा सुनकर सारे हर्षित होते प्राणी
कला कुशलता कनकप्रभा की, मानो थी अमृतमय।।

गण निष्ठा मर्यादा निष्ठा संयम निष्ठा भारी
जागरूकता अद्भुत अनुपम गण से ही इकतारी
गण-गणपति की सेवा करके, कीया है कर्मों का क्षय।।

लंबे-लंबे कर विहार गुरु महाश्रमण पधराए
तीनों समय कराई सेवा अमृत घूँट पिलाए
मुनि चैतन्य छाँव रहे वो, सदा-सदा ममतामय।।

लय : मांय न मांय तेरी---

शासनमाता ध्यान धरें

● **मुनि दीप कुमार जी** ●

शासनमाता ध्यान धरें।
साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा को जन-जन याद करें।। ध्रुव।।

तेरापंथ राजधानी की थी सुपुत्री शुभकारी।
गुरुवर तुलसी से साध्वी दीक्षा हुई मंगलकारी।
क्रमशः बढ़ती गई संघ में मानों अमृत रस झरें।।१।।

गुरुवर तुलसी की अनुपम अनुकंपा तुमने पाई।
साध्वीप्रमुखा अष्टम बनकर सकल संघ में छाई।
साध्वी समाज को खूब संभाला, प्रगति शिखर वरें।।२।।

तेरे भाषण, लेखन में निपुणता भैक्षव गण में निराली।
विनयनिष्ठ, व्यवहार कुशल थी, सबके मन थी खुशहाली।
तीन-तीन गुरुओं की सेवा में थी महासतीवरे।।३।।

महाश्रमण गुरुवर ने अमाप्य कृपा तुम पर बरसाई।
असाधारण साध्वीप्रमुखा, शासनमाता वरदाई।
गुरुवर द्वारा अमृत महोत्सव तेरा महाश्रमणी वरे।।४।।

साध्वीप्रमुखा पद पर दी पाँच दशक तक सेवा।
स्मृतियों के झरोखे में है मानो कोई मेवा।
शासनमाता के गुण गाकर 'दीप' गुण विपूल भरे।।५।।

लय : धर्म की लौ जगाएँ हम

वृक्षारोपण कार्यक्रम

मुंबई।

अणुव्रत समिति, मुंबई के तत्त्वावधान में अणुव्रत क्षेत्र मलाड़ गोरेगाँव जोगेश्वरी द्वारा जोगेश्वरी क्षेत्र के रिहायशी इलाके में वृक्षारोपण किया गया। इस कार्य में अणुव्रत समिति, मुंबई सदस्या डिंपल हिरण, क्षेत्र संयोजक, राकेश बोहरा, सह-संयोजक दिनेश सिंघवी, नरेश सिंघवी, शांतिलाल बाफना, हेमंत कोठारी, महेंद्र कोठारी, अमित डागलिया, भरत बेताला, सीमा सिंघवी, नीता सिंघवी, सीमा कोठारी, रिंपल वड़ाला, संगीता तलेसरा एवं संगीता धाकड़ का सहयोग रहा। भविष्य में उन पौधों की सार-संभाल की जिम्मेदारी दिनेश सिंघवी ने ली।

तेयुप के विविध कार्यक्रम

सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग सेमिनार का शुभारंभ

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलुरु द्वारा सात दिवसीय कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (सीपीएस) कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में प्रारंभ हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा विजय गीत का सुमधुर संगान किया गया। तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करते हुए स्वागत वक्तव्य दिया।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने अभातेयुप द्वारा पूरे भारत में आयोजित सीपीएस कार्यशाला की सराहना करते हुए तेयुप, बैंगलुरु द्वारा आयोजित बैंगलुरु क्षेत्रीय कार्यशाला के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने प्रेरणा दी कि इस कार्यशाला के माध्यम से वक्तव्य तो सीखेंगे ही, उसके साथ-साथ कहीं प्रशिक्षक बनने का भी लक्ष्य रखें। सीपीएस सेमिनार के प्रशिक्षकों में दो दिवसीय प्रशिक्षक का दायित्व निभा रहे क्षेत्रीय प्रशिक्षिका मनीषा सेठिया दो दिवसीय प्रशिक्षण हेतु मंच संचालन संभाला।

कार्यशाला के संयोजक भरत रायसोनी व सह-संयोजक मुदित समदड़िया ने पूरी व्यवस्था की सार-संभाल की। राष्ट्रीय प्रशिक्षक हितेश गिड़िया, आंचलिक प्रशिक्षिका पिंकी टेबा, संगीता गन्ना व शेफाली मांडोत की विशेष उपस्थिति रही। सभी का आभार परिषद मंत्री प्रवीण बोहरा ने माना।

नि:शुल्क थाइराइड चेकअप कैंप का आयोजन

बैंगलोर।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलोर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, अड्गुड़ी व यशवंतपुर द्वारा नि:शुल्क थाइराइड चेकअप कैंप आयोजित किया गया।

थाइराइड चेकअप के तहत टी३, टी४ व टीहेचएस के तीन टेस्ट खाली पेट किए गए। चेकअप के लिए पधारे सभी लाभार्थियों का पंजीकरण किया गया। तत्पश्चात सुव्यवस्था से थाइराइड चेकअप औपचारिकता पूरी की गई। प्रभारी रजत बैद ने सभी को व्यवस्था की संक्षिप्त जानकारी दी। अड्गुड़ी में सहप्रभारी सुरेश संचेती व यशवंतपुर में संयोजक दीपक बाबेल ने कैंप की व्यवस्था संभाली। अइस कैंप में अड्गुड़ी एटीडीसी से २५ व यशवंतपुर एटीडीसी से ५३ लाभार्थियों ने थाइराइड चेकअप करवाया।

स्वस्थ होली सद्भाव की रंगोली

भिवानी।

अणुव्रत समिति द्वारा छात्र-छात्राओं को ईको फ्रेंडली होली मनाने के लिए प्रेरित किया गया। श्रीराम पाठशाला में सुरेंद्र जैन 'एडवोकेट' एवं समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने विद्यार्थियों एवं शिक्षण स्टॉफ को होली के नाम पर पानी के अपव्यय एवं कैमिकल युक्त रंगों से बचने की अपील की। उन्होंने कहा कि होली को ईको फ्रेंडली तरीके से सिर्फ तिलक होली खेलकर ही मनाना चाहिए। समिति अध्यक्ष ने बच्चों से पानी वाले रंगों से न खोलने की शपथ दिलवाई।

उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में पर्यावरण को बचाने के लिए ये छोटे-छोटे संकल्प ही कारगर हैं। इस अवसर पर प्राचार्य संगीता अरोड़ा, लक्ष्मण अग्रवाल, समिति के मंत्री ब्रजेश आचार्य, टेकचंद जैन, राजरानी, ममता शर्मा, सुमित्रा, स्वीटी, लक्ष्मी सैणी रेखा और सुनीता सहित समस्त स्टॉफ एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

मिशन उत्थान का आगाज

अंधेरी (मुंबई)।

डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी के सान्निध्य में मिशन उत्थान का आगाज वेस्टर्न सबर्ब में गूंदवली स्कूली अंधेरी में हुआ। अंधेरी महिला मंडल संयोजिका शशि लोढ़ा ने मंगलाचरण के द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अंधेरी तेयुप अध्यक्ष दिनेश नौलखा ने संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से अंधेरी एवं मुंबई के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे हुए सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम के विशेष सहयोगी चैनरूप दुगड़ एवं खड्ग सिंह दुधोड़िया रहे।

तेरापंथी सभा, मुंबई के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, मंत्री विजय पटवारी, उत्थान के संयोजक रतन सियाल की विशेष उपस्थिति रही। तेरापंथ कन्या मंडल एवं महिला मंडल, अंधेरी द्वारा उत्थान को आसान तरीके से समझाने के लिए तारक मेहता का उल्टा चश्मा सीरियल पर आधारित एक विशेष नाटिका की प्रस्तुति उत्थान मुंबई की कार्यकारिणी सदस्या पूनम परमार के सहयोग से कराई। कार्यक्रम को सफल बनाने में अंधेरी की सभी सभा-संस्थाओं का सहयोग मिला। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अंधेरी के संगठन मंत्री तरुण गुंदेचा ने किया।

✦ *संप्रदाय लिफाफा, छिलका और शरीर की भांति है, जबकि धर्म पत्र, फल और आत्मा की भांति होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022

हम सभी आत्मनिग्रह की दिशा में आगे बढ़ें : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म साधना केंद्र, १४ मार्च, २०२२

महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में सुख भी है, दुःख भी है। अनेक बार आदमी अपने चिंतन से दुःखी बन जाता है। चिंतन में बदलाव आता है, तो वह दुःख दूर भी हो सकता है। परिस्थिति कठिन है, एक आदमी उससे दुःखी हो रहा है, तो दूसरा आदमी दुःखी नहीं भी होता है। समस्या जीवन में आ सकती है, पर समस्या से मानसिक स्तर पर दुःखी बनना जरूरी नहीं है।

समस्या और दुःख एक चीज नहीं है। भौतिक कठिनाईयाँ या मानसिक परेशानियाँ हो सकती हैं। भावात्मक विकास नहीं होता है, तो आदमी कठिनाइयों से दब सकता है। इन दुःखों से छुटकारा मिल सकता है क्या? मिल सकता है, तो उसका तरीका क्या है? शास्त्रकार ने बताया है, अपने आपको ही अभिनिग्रिहित करो। अपने आप पर कंट्रोल करो। इस प्रकार तुम दुःख से मुक्त हो जाओगे। सुख-दुःख हमारे भीतर ही है।

हमारे साधु संस्था में चित्त समाधि की बात चलती है। चित्त समाधि अच्छी रहे। मैं मेरी चित्त समाधि अपने हाथ में रख सकूँ तो बढ़िया बात है। चित्त समाधि पराश्रित हो गई तो अप्रसन्नता हो सकती है। उपादान मजबूत होगा तो चित्त समाधि खंडित नहीं होगी। क्या तो अरति है, क्या आनंद है? ग्रहण मत करो। ग्रहण करेंगे तो दिमाग में असर होगा।

कोई बुराई करता है, उसमें सच्चाई है, तो उस बात पर ध्यान देकर कमजोरी को दूर करें। तथ्य नहीं है, तो उस पर ध्यान मत दो। चित्त समाधि अपने हाथ में ही रहे। परिवार हो, संस्था हो, अपनी शांति अपने पास रहे। निमित्त प्रतिकूल होने पर भी हमारी शांति भंग न हो। हमारी सहनशीलता-समता की शक्ति रहे।

मन को वाटर प्रूफ बना लें। यह एक प्रसंग से समझाया कि निमित्त भले प्रतिकूल है, पर निमित्त समाधि को खंडित न कर दे। अपने चिंतन को अच्छा रखें। सहिष्णुता जीवन में रहे। दूसरे के कहने से कोई चोर या बड़ा नहीं बन जाता है। हमारा धर्मसंघ आध्यात्मिकता से जुड़ा धर्मसंघ है। हम उसके पथिक बने रहें। इसके लिए अपने आपका निग्रह करना अच्छा रहता है।

जिनको तिथि या दिनांक से दीक्षा लिए २५ वर्ष हो गए हैं, वो अपनी साधना का और विकास करे। अच्छी सेवा व धर्मसंघ की प्रभावना करें। हम सभी आत्मनिग्रह की दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है। पूज्यप्रवर ने शासनमाता के स्वास्थ्य की मंगलकामना हेतु मंत्र जप का उच्चारण करवाया।

पूज्यप्रवर के सान्निध्य में शासनश्री साध्वी कंचनकुमारी जी 'लाडनूं' की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। पूज्यप्रवर ने उनके जीवन के विषय मे फरमाया कि उनकी आत्मा की मंगलकामना करते हुए चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्य मुनिश्री, मुख्य नियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी कंचनकुमारीजी की सहवर्तिनी साध्वियों द्वारा गीत, साध्वी सिद्धप्रभाजी, साध्वी मलययशाजी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, मुनि कमल कुमार जी, समणी सौम्यप्रज्ञा जी, मुनि रिषभकुमार जी ने साध्वी कंचनकुमारी जी की आत्मा के प्रति मंगलकामना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी के प्रति

शासनमाता की पुण्याई

● **मुनि कमल कुमार** ●

शासनमाता का स्मरण करो
तन-मन चिंतन का क्लेश हरो।।ध्रुव।।

तुलसी गुरु कर संयम पाया
नित बनी रही गुरु की छाया
इकरंगी चंगी को सुमरो।।१।।

प्रमुखा पद गुरु ने बक्साया
जन-जन का मानस हर्षाया
सद्गुण गागर को मत विसरो।।२।।

गुरु महाश्रमण युग में जुबली
खिल गई सभी की कली-कली
तप-जप करके भव सिंधु तरो।।३।।

त्रय गुरुओं की करुणा भारी
प्रतिपल रहती थी आभारी
गुण चुन-चुन जीवन कलश भरो।।४।।

शासनमाता की पुण्याई
गुरुवर सह यात्रा कर आई
चरणों में नत हो शीष धरो।।५।।

चलते-फिरते प्रस्थान किया
गण गणपति ने सम्मान दिया
तन्मय बन सब संगान करो
निश्चल मन ध्याकर विजय वरो।।६।।

लय : ओम पार्श्वप्रभु का ध्यान धरो

धारा अद्भुत संथारा

● **नचिकेता मुनि आदित्य कुमार** ●

जीया जागृत बनकर जीवन, मृत्यु को भी स्वीकारा।
धन्य-धन्य है शासनमाता! धारा अद्भुत संथारा।।

परखा तुलसी की नजरों ने, साध्वीप्रमुखा पद पाया,
शिक्षा कला साधना में, साध्वी समाज को विकसाया।
श्रद्धा-सेवा और समर्पण, श्रम की बहती शुभ धारा।।

साहित्यिक यात्रा की गाथा, रोमांचक मंगलकारी,
कविता-लेख-कथा कौशल की, जन-जन जाता बलिहारी।
मेरा जीवन-मेरा दर्शन, निर्मित संपादन द्वारा।।

महाश्रमण युग में पचास संवत्सर पद के पूर्ण किए,
अमृत महोत्सव गुरु सन्निधि में, ज्योतित गण में हर्ष दिए।
मर्यादोत्सव बीदासर पर, किया कार्य अपना सारा।।

विषम व्याधि ने डाला डेरा, समता फिर भी क्षण क्षण में,
गुरुवर के दर्शन हो जाएँ, यही भावना थी मन में।
लंबे-लंबे कर विहार गुरुवर आए जय जयकारा।।

अंत समय में गुरुवर मुख से, स्वीकारा दुर्लभ अनशन।
चंद समय में छोड़ी काया, चकित हुआ जन-जन का मन।
अमर बना कर्तृत्व तुम्हारा, प्रेरित है शासन सारा।।

लय : कलयुग बैठा मार कुंडली

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अब त्वरित समाचारों के लिए तेरापंथ टाइम्स ई-बुलेटिन (डिजिटल अंक) पढें

http://terapanthtimes.com

ऑनलाईन विकल्प के अलावा तेरापंथ टाईम्स मंगवाने के लिए सम्पर्क करें

8905995001

delhioffice@abtyp.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
28 मार्च - 3 अप्रैल, 2022

✦ *जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं स्मृति सभा

मोक्ष प्राप्ति के लिए सम्यक्त्व जरूरी है : आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म साधना केंद्र, १६ मार्च, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के सारथी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री जी की स्मृति सभा के दूसरे दिन फरमाया कि जैन शासन में सम्यक्त्व और चारित्र—ये दोनों बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए सम्यक्त्व जरूरी है और चारित्राराधना भी आवश्यक है। सम्यक्त्व है, पर चारित्र के बिना मोक्ष प्राप्ति की दिशा में संपूर्णता नहीं आती है।

अनंत आत्माएँ संसार में हैं। मोक्ष में भी हैं। ऐसा लगता है, प्रत्येक आत्मा भले वह आज सिद्ध है या संसारी है, कभी न कभी तो मिथ्यात्वी अवश्य ही थी। अनंत-अनंत काल तक हर आत्मा मिथ्यात्ववस्था में रही है। सम्यक्त्व प्राप्ति होती है, मानो एक आध्यात्मिक प्रकाश प्राप्त होता है। वह जीव की अनंत-अनंत काल की यात्रा में बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है।

सम्यक्त्व से बड़ा कोई रत्न नहीं दुनिया में। दुनिया में इससे बड़ा न तो कोई मित्र है, न बंधु है, न इसके समान कोई लाभ है। चारित्र के बिना सम्यक्त्व तो हो सकता है, पर सम्यक्त्व के बिना चारित्र नहीं हो सकता, यह महत्त्वपूर्ण बात है। चारित्र को सम्यक्त्व का आधार चाहिए, पर सम्यक्त्व को चारित्र का आधार नहीं चाहिए। सम्यक्त्व अकेला रह सकता है, पर चारित्र नहीं।

सम्यक्त्व हमारा कैसे निर्मल रहे, इसके लिए तीन बातें अच्छी प्रतीत हो रही हैं—यथार्थ के प्रति श्रद्धा, मैं उसी को सत्य मानता हूँ जो जिनों के द्वारा प्रज्ञप्त है। तत्त्वबोध का प्रयास हो। तत्त्व को समझें जीव क्या, अजीव क्या आदि नौ तत्त्वों को समझें। मेरा ज्ञान सही हो। कषाय मंदता—राग-द्वेष व कषाय मेरे प्रतनु बने। ये तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं।

सम्यक्त्व है, फिर साथ में चारित्र है तो फिर कहना ही क्या? सोने में सुहागा है। दोनों है, तो मोक्ष का मार्ग परिपूर्ण हो गया।

शासनमाता का स्मृति सभा का क्रम चल रहा है। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने चारित्र भी ग्रहण किया। सम्यक्त्व और चारित्र की आराधना अच्छी होती है। दोष लग सकता है, पर शुद्धिकरण का प्रयास चलता रहे। आलोयणा व प्रतिक्रमण शुद्धि का उपाय है। साध्वीप्रमुखाश्री जी को मैं लगातार आलोयणा करवाता रहा। आजीवन संयम जीवन की भी सूक्ष्मता से आलोयणा कराई थी। पाँचों महाव्रतों व छठे रात्रि भोजन विरमण का भी दोबारा प्रत्याख्यन करवाए।

वो बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित करती रहती थी। उनके गुरु दर्शन की चाह थी। दूर बैठे भी उनका मनोभाव था कि मेरे लिए आचार्यश्री को इतना श्रम करना पड़ेगा। उनकी चिकित्सा का प्रयास भी बहुत हुआ। उनकी भावना थी कि अब ८० वर्ष की हो गई हूँ और दोष क्यों लगाऊँ।

उन्होंने अपने जीवन में साधना की और कितनों की साधना में सहयोग दिया है। सैकड़ों-सैकड़ों साध्वियों का दीक्षा के समय का लोच किया था। कितनी सेवा की और आचार्यों को व्यवस्था में सहयोग दिया। संयम में रहते हुए सेवा-सहयोग दिया जाता है, तो जीवन सार्थक बन सकता है। उन्होंने लंबे काल तक हमारे धर्मसंघ को सेवाएँ दी हैं। उनकी सेवाओं से धर्मसंघ को भी आगे बढ़ने का मौका मिला है। हम उनके गुणों का स्मरण करके विकास का जितना प्रयास कर सकें, करते रहें।

शासनमाता की स्मृति सभा में जैविभा विश्वविद्यालय की कुलाधिपति सावित्री जिंदल ने उनके प्रति अपने भाव उद्गारित किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें आशीर्वचन फरमाया।

मुनि नम्रकुमार जी, साध्वी विशालयशाजी, साध्वी काम्यप्रभाजी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी अनन्यप्रभाजी, साध्वी कुष्यप्रभाजी, साध्वी सुनंदाश्रीजी, साध्वी सुदीप्रभाजी, साध्वी तेजस्वीयशाजी, साध्वी ओजसप्रभाजी, साध्वी चिंतनप्रभाजी, साध्वी कांतयशाजी, साध्वी सिद्धप्रभाजी, साध्वी चित्तप्रभाजी, समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी अर्हतप्रज्ञाजी, समणी मृदुप्रज्ञा जी, समणी क्षांतिप्रज्ञा जी, समणी स्वर्णप्रज्ञाजी, समणी सौम्यप्रज्ञा जी, मुमुक्षु अंकिता, मुमुक्षु सलौनी, मुमुक्षु मानवी, बोधार्थी ऋजुल, बोधार्थी खुशबू ने शासनमाता की स्मृति में अपने अनुभवों व भावों की अभिव्यक्ति दी।

शासनमाता के प्रति अपनी भावांजलि प्रदान करते हुए पालम सभा से ईश्वर जैन, संजय सुराणा, अध्यक्ष शास्त्रीनगर सभा, संजय चोरड़िया, दक्षिणी दिल्ली अध्यक्ष, मूलचंद नाहर, सतीष कुमार जैन, रमेश बोहरा, शशिकला नाहर, ऋतु धोका, अभिलाषा बांठिया, सरला भूतोड़िया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

यादें... शासनमाता की - (२)

● साध्वी स्वस्तिक प्रभा ●

७ मार्च, सन् २०२२, प्रातः लगभग ७ बजे सा०प्र० के पास पधार गए। वंदना के पश्चात्

सा०प्र०—आज्ञा-अलोयणा का जिम्मा जिन्हें देना हो, आ०प्र० उन्हें फरमा दें।

आ०प्र०—ये बात हम बाद में करेंगे, पहले स्वास्थ्य संबंधी बात करते हैं।

डॉ० राजेशजी कुंडलिया ने बीदासर से लेकर अब तक की शारीरिक स्थिति की विस्तृत जानकारी दी। प्रसंगवश डॉ० राजेशजी ने कहा—सा०प्र० मेरी माँ से बढ़कर है।

आ०प्र० ने अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली जाने का निर्णय किया और फरमाया—मुख्य नियोजिकाजी सा०प्र० के परिपार्श्व में हो तो आज्ञा-आलोयणा का जिम्मा उनका रहे। उनका विकल्प साध्वीवर्या रहे। सा०प्र० को पल-पल साता-समाधि पहुँचाएँ और आस-पास में शोरगुल न रहे। जप-स्वाध्याय धीरे-धीरे चले।

तत्पश्चात् आ०प्र० अपने प्रवास कक्ष की ओर पधार गए। लगभग ६:३० बजे पुनः सा०प्र० को सेवा करवाने के लिए पधारे।

आ०प्र०—आपने बहुत काम किया है—

– गुरुदेव के साहित्य का काम
– छोटे संतों के प्रेरणा देना
– साध्वी समुदाय का काम
– संतों को धर्मोपकरण वितरण करना
– हमारे कार्य-सिलाई आदि सिखाना

सा०प्र०—गुरुदेव का प्रताप है, संघ की शक्ति है। गुरुदेव ने कितनी मेहनत करवाई है। कितने लंबे-लंबे विहार करवाए हैं।

दोपहर में लगभग १:२० पर आ०प्र० पुनः सा०प्र० के कक्ष में पधारे।

आ०प्र०—आपके अनुकूलता हो तो मैं कुछ बातें आलोयणा (आत्मालोचन) के रूप में आपको बताऊँ। आलोयणा से संयम का पर्यवेक्षण हो सकता है। जैसे शरीर में व्याधि होने पर ध्यान दिया जाता है, डॉक्टर को दिखाया जाता है, चेकअप करवाया जाता है वैसे ही संयम भी मानो शरीर है।

सूक्ष्मता से देखें कि इसमें कहीं कोई दोष तो नहीं लगा है। जिस प्रकार पहले एक्स-रे होता है, उसके बाद सोनोग्राफी की जाती है, फिर एम०आर०आई० होती है, उसी प्रकार अब गहराई से ध्यान देना है कि कहीं कोई दोष तो नहीं लगा है ना। इसमें ऋजुता आवश्यक है। यदि ऋजुता न हो तो कहीं बिंदी (धब्बा) सी लग जाती है। विशेष रूप से जब शरीर बीमार हो जाए तब आलोयणा कर लेनी चाहिए।

लगभग १:३० बजे प०पू० आ०प्र० ने सा०प्र० को आलोयणा करवाना प्रारंभ किया। उस समय कक्ष में केवल आ०प्र०, मुख्यमुनिप्रवर एवं सा०प्र० विराजित थे। शेष साधु-साध्वियाँ कक्ष के बाहर थे।

आ०प्र० ने ५ महाव्रत, रात्रि भोजन विरमण व्रत, ५ समिति, ३ गुप्ति, देव, गुरु, धर्म तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र—इन सबकी विस्तार से आलोयणा करवाई।

करीब ४० मिनिट तक यह क्रम चला। आलोयणा के संदर्भ में सा०प्र० ने अपने जीवन के प्रसंग विशेष को भी जागरूकतापूर्वक आ०प्र० से निवेदित किया। इस क्रम के अंत में करबद्ध, विनत भाव से सा०प्र० ने फरमाया—

गुरु हो तो ऐसे हो। गुरुदेव! आपने पूर्ण कृपा करवाई, अनुग्रह करवाया। आलोयणा करवाकर आपने मुझे शुद्ध बना दिया।

फिर आ०प्र० ने वहाँ से प्रस्थान किया और लगभग १० कि०मी० का विहार कर राजेंद्र नगर में कन्हैयालालजी पटावरी के घर रात्रि प्रवास किया।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**